गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका मई-2020

ज्योतिष

शनि जयंति विशेष

Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
मासिक ई-पत्रिका
मई-2020

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

शनिदेव का परिचय	7	सामुद्रिक शास्त्र में शनि रेखा का महत्व	46
शनिवार व्रत का महत्व	12	शनि के विभिन्न पाय का	48
शनिमङ्गलस्तोत्रम्	16	शनिग्रह से संबंधित रोग	51
शनि प्रदोष व्रत का महत्व	17	शनिदेव की कृपा प्राप्ति के सरल उपाय	52
शनि-साढ़ेसाती के शांति उपाय	19	शनि के विभिन्न मंत्र	54
श्रीशनिरक्षास्तवः	20	महाकाल शनि मृत्युंजय स्तोत्र	55
शनि-भार्या-स्तोत्र	21	शनैश्चरस्तवराज(भविष्यपुराण)	58
श्रीशनैश्चरमालामन्त्रः	22	शनैश्चरस्तोत्रम् (श्रीब्रह्माण्डपुराण)	59
श्री शनैश्चर सहस्रनाम स्तोत्रम्	23	शनिवज्रपंजरकवचम्	59
श्रीशनैश्चरसहस्रनामावलि	29	दशरथकृत-शनि-स्तोत्र	60
जब हनुमान जी ने मिटाई शनिदेव की पीड़ा!	38	शनि अष्टोत्तरशतनामावलि	64
श्री शनि चालीसा	39	श्री शनि अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	65
शनि सम्बन्धी व्यापार और नौकरी	39	श्री शनिनामस्तुतिः	65
शनि सम्बन्धी दान पुण्य	39	मोहिनी एकादशी 3 - 4 मई 2020	66
अंक ज्योतिष में शनि का रहस्य	40	अपरा (अचला) एकादशी व्रत 18 मई 2020	68
शनिस्तोत्रम्	43	वैशाख मास की अंतिम तीन तिथि का धार्मिक महत्व	69
रत्नों का अद्भुत रहस्य शनि रत्न नीलम	44	गुरु पुष्यामृत योग	71

स्थायी और अन्य लेख

संपादकीय	4	दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका	98
मई 2020 मासिक पंचांग	89	दिन- रात के चौघडिये	99
मई 2020 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार	91	दिन- रात कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक	100
मई 2020 -विशेष योग	98		

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

खगोल विज्ञान के अनुसार शनि सौरमण्डल के एक सदस्य ग्रह है। यह सूरज से छठे स्थान पर है और सौर मंडल में बृहस्पति के बाद सबसे बड़ा ग्रह हैं। इसके कक्षीय परिभ्रमण का पथ १४,२९,४०,००० किलोमीटर है। शनि ग्रह की खोज प्राचीन काल में ही हो गई थी। लेकिन वैज्ञानिक द्रष्टी कोण से गैलीलियो गैलिली ने सन् १६१० में दूरबीन की सहायता से इस ग्रह को खोजा था। शनि ग्रह की रचना ७५% हाइड्रोजन और २५% हीलियम से हुई है। जल, मिथेन,अमोनिया और पत्थर यहाँ बहुत कम मात्रा में पाए जाते हैं। सौर मण्डल में चार ग्रहों को गैस दानव कहा जाता है, क्योंकि इनमें मिटटी-पत्थर की बजाय अधिकतर गैस है और इनका आकार बहुत ही विशाल है। शनि इनमे से एक है - बाकी तीन बृहस्पति, अरुण(युरेनस) और वरुण (नॅप्टयून) हैं।

विभिन्न संस्कृति में शनिदेव को अर्कपुत्र, सौरि, भास्करि, यम, आर्कि, छाया सुत, तरणितनय, कोण, नील, आसित, फारसी व अरबी में जुदुल, केदवान, हुहल तथा अंग्रेजी में सैटर्न आदि नामों से जना जाता हैं। शनि ग्रह सौरमंडल में सूर्य की परिक्रमा करने वाला छठा ग्रह है।

वेद-पुराणों के अनुसार शनिदेव सूर्यदेव की दूसरी पत्नी देवीछाया के पुत्र है, और इसका वर्ण श्यामल है। एक बार शनिदेव के श्याम वर्ण देखकर सूर्य ने उसे अपना पुत्र मानने से इनकार कर दिया। अपने प्रति पिता के इस व्यवहार को देखकर शनि की भावनाओं को ठेस लगी जिसके परिणामस्वरूप वह अपने पिता सूर्य से शत्रुभाव रखने लगे।

सूर्यदेव के पुत्र हैं शनिदेव ज्योतिष के विद्वानो के अनुशार यह संपूर्ण संसार सौरमंडल के ग्रहों द्वारा नियंत्रित हैं और शनिदेव इन ग्रहो में से मुख्य नियंत्रक हैं। शनिदेव को ग्रहों के न्यायाधीश मंडल का प्रधान न्यायाधीश कहा गया हैं। कुछ विद्वानो का मत हैं की शनिदेव के निर्णय के अनुसार ही अन्य ग्रह संबंधित व्यक्ति को शुभा-शुभ फल प्रदान करते हैं। जड़-चेतन सभी पर ग्रहों का अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव निश्चित पड़ता हैं। आपके मार्गदर्शन हेतु शनिदेव से संबंधित कुछ विशिष्ट जानकारियां देने का प्रयास कियाहैं।

पुरातन काल से लोगों के अंदर शनिदेव के प्रति गलत धारणाएं, भय घर किये बैठा हैं, शनिदेव नाम सुनते ही लोग भयभीत हो जाते हैं। शनिदेव का पौराणिक परिचय आपकी जानकारी हेतु प्रस्तुत हैं जिससे शनिदेव से संबंधी व्याप्त विभिन्न भ्रांतियों के निवारण में आपको सहायता मिले।

भारतीय शास्त्रो के अनुशार शनिदेव का वर्णन हैं शनि ग्रह वैदूर्यरत्न अथवा बाणफ़ूल या अलसी के फ़ूल जैसे निर्मल रंग से जब प्रकाशित होता है, तो उस समय प्रजा के लिये शुभ फ़ल देता है यह अन्य वर्णों को प्रकाश देता है, तो उच्च वर्णों को समाप्त करता है, ऐसाऋषि महात्मा कहते हैं।

शनिदेव का स्वरुप: शनैश्चर का शरीर-कान्ति इन्द्रनीलमणि के समान हैं। शनिदेव के सिर पर स्वर्ण मुकुट गले में माला तथा शरीर पर नीले रंग के वस्त्र सुशोभित होते हैं। शनिदेव का वर्ण कृष्ण, वाहन गीध तथा लोहे का बना रथ है।

रामायण में उल्लेखीत हैं की जब लंकापति रावण के सभी भ्राता व पुत्रों की युद्ध में मृत्यु हो रही थी तब रावण ने अपने अमरत्व के लिए सौरमंडल के सभी ग्रहों को अपने दरबार में कैदकर लिया। रावण की कुंडली में शनि ही एक मात्र ऐसा ग्रह था जिसकी वक्रावस्था और योगों के कारण रावण के लिए मार्केश की स्थिति उत्पन्न हो रही थी, जिसे परिवर्तित करने के लिए रावण ने अपने दरबार में शनि को उलटा लटका दिया व घोर यातनाएं देने लगा। लेकिन रावण के एसा करने से शनि के व्यवहारों में कोई बदलाव नहीं आया और वह कष्ट सहते रहे।

पवन पुत्र श्री हनुमान वहां पहुंचे और शनि को रावण की कैद से मुक्त कराया। इसी उपकार के बदले शनिदेव ने हनुमानजी को वचब दिया कि जो भी आपकी आराधना करेगा, मैं अपनी साढेसाती, ढैया, दशा-महादशा से उसकी सर्वदा रक्षा करुंगा।

इसी लिये श्री हनुमानजी के भक्तों के लिए शुभ फलदायक होते हैं शनिदेव श्री हनुमान ने शनि को कष्टों से मुक्त कराकर उसकी रक्षा किथी इसीलिए वह भी श्री हनुमान की उपासना करने वालों के कष्टों को दूर कर उनके हितों की रक्षा करता है। शनि से उत्पन्न कष्टों के निवारण हेतु श्री हनुमान को अधिक से अधिक प्रसन्न किया जाए। इससे न केवल शनि से उत्पन्न दोषों का निवारण होता है, बल्कि सूर्य व मंगल के साथ शनि की शत्रुता व योगों के कारण उत्पन्न सारे कष्ट भी दूर हो जाते हैं।

शनि देव ही प्रत्येक जीव के आयु के कारक हैं, आयु वृद्धि करने वाले ग्रह भी शनिदेव हैं, आयुष योग में शनि का स्थान महत्वपूर्ण है किन्तु शुभ स्थिति में होने पर शनि आयु वृद्धि करते हैं तो अशुभ स्थिति में होने पर आयु का हरण कर लेते हैं।

शनिदेव लम्बी बिमारी के भी प्रमुख कारक ग्रह हैं अतः जो व्यक्ति लम्बे समय से बिमारी से पीडित हैं। रोग, कष्ट, निर्धनता आदि उनका पीछा नहीं छोड रहे हो उन्हें शनिदेव कि उपासना अवश्य करनी चाहिये। शनिदेव के प्रसन्न होने से व्यक्ति को निरोगी काया व दुःख दरिद्रता से मुक्ति मिलती हैं व दिर्धायु की प्राप्ति होती हैं। पत्रिका के इस अंक में पाठको के मार्गदर्शन हेतु शनिदेव से संबंधित शास्त्रों में वर्णित विभिन्न जानकारीयां, रत्न, मंत्र, शनिदेव की शांति के उपाय आदि से आपको परिचित कराने का प्रयास किया हैं।

आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से हार्दिक शुभकामनाएं ..

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो परमपिता परमात्मा की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। परमात्मा से यही प्राथना हैं... चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

शनिदेव का परिचय

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पद: ब्रह्मा
रंग: काला
तत्व: वायु
जाति: शूद्र
प्रकृति: तामसिक
विवरण: क्षीण और लम्बा शरीर, गहरी पीली आँखें, वात, बड़े दांत, अकर्मण्य, लंगड़ापन, मोटे बालों.
धातु: स्नायु

निवास: मलिन जमीन
समय अवधि: साल
स्वाद: कसैले
मजबूत दिशा: पश्चिम
पेड़: पीपल, बांबी
कपड़े: काले, नीले, बहु रंग का वस्त्र
मौसम: सिशिर Sishira
पदार्थ: धातु,

शनि ग्रह

शनि सौरमण्डल के एक सदस्य ग्रह है। यह सूरज से छठे स्थान पर है और सौर मंडल में बृहस्पति के बाद सबसे बड़ा ग्रह हैं। इसके कक्षीय परिभ्रमण का पथ १४,२९,४०,००० किलोमीटर है। शनि ग्रह की खोज प्राचीन काल में ही हो गई थी। लेकिन वैज्ञानिक द्रष्टी कोण से गैलीलियो गैलिली ने सन् १६१० में दूरबीन की सहायता से इस ग्रह को खोजा था। शनि ग्रह की रचना ७५% हाइड्रोजन और २५% हीलियम से हुई है। जल, मिथेन,अमोनिया और पत्थर यहाँ बहुत कम मात्रा में पाए जाते हैं। सौर मण्डल में चार ग्रहों को गैस दानव कहा जाता है, क्योंकि इनमें मिटटी-पत्थर की बजाय अधिकतर गैस है और इनका आकार बहुत ही विशाल है। शनि इनमे से एक है - बाकी तीन बृहस्पति, अरुण(युरेनस) और वरुण (नॅप्टयून) हैं।

शनि के छल्ले

शनि ग्रह के चारों ओर कई उपग्रही छल्ले हैं। यह छल्ले बहुत ही पतले होते हैं। हालांकि यह छल्ले चौड़ाई में २५०,००० किलोमीटर है लेकिन यह मोटाई में एक किलोमीटर से भी कम हैं। इन छल्लों के कण मुख्यत: बर्फ और बर्फ से ढ़के पथरीले पदार्थों से बने हैं।

नये वैज्ञानिक शोध के अनुशार शनि ग्रह के छल्ले ४-५ अरब वर्ष पहले बने हों जिस समय सौर प्रणाली अपनी निर्माण अवस्था में ही थी। पहले ऐसा माना जाता था कि ये छल्ले डायनासौर युग में अस्तित्व में आए थे। अमेरिका में वैज्ञानिकों ने में पाया कि शनि ग्रह के छल्ले दस करोड़ साल पहले बनने के बजाय उस समय अस्तित्व में आए जब सौर प्रणाली अपनी शैशवावस्था में थी। १९७० के दशक में वैज्ञानिक यह मानने लगे थे कि शनि ग्रह के छल्ले काफी युवा हैं और संभवत: यह किसी धूमकेतु के बड़े चंद्रमा से टकराने के कारण पैदा हुए हैं। कुछ वैज्ञानिको के अनुशार शनि के छल्ले हमेशा से थे लेकिन उनमें लगातार बदलाव आता रहा और वे आने वाले कई अरबों साल तक अस्तित्व में रहेंगे।

भारतीय शास्त्रो के अनुशार शनिदेव का वर्णन

वैदूर्य कांति रमल, प्रजानां वाणातसी
कुसुम वर्ण विभश्च शरत:।

अन्यापि वर्ण भुव गच्छति तत्सवर्णाभि
सूर्यात्मजः अव्यतीति मुनि प्रवादः॥

भावार्थ:- शनि ग्रह वैदूर्यरत्न अथवा बाणफ़ूल या अलसी के फ़ूल जैसे निर्मल रंग से जब प्रकाशित होता है, तो उस समय प्रजा के लिये शुभ फ़ल देता है यह अन्य वर्णो को प्रकाश देता है, तो उच्च वर्णो को समाप्त करता है, ऐसाऋषि महात्मा कहते हैं।

शनिदेव का स्वरुप:

शनैश्चर का शरीर-कान्ति इन्द्रनीलमणि के समान हैं। शनिदेव के सिर पर स्वर्ण मुकुट गले में माला तथा शरीर पर नीले रंग के वस्त्र सुशोभित होते हैं। शनिदेव का वर्ण कृष्ण, वाहन गीध तथा लोहे का बना रथ है।

सूर्यदेव के पुत्र हैं शनिदेव

ज्योतिष के विद्वानो के अनुशार यह संपूर्ण संसार सौरमंडल के ग्रहों द्वारा नियंत्रित हैं और शनिदेव इन ग्रहो में से मुख्य नियंत्रक हैं। शनिदेव को ग्रहों के न्यायाधीश मंडल का प्रधान न्यायाधीश कहा गया हैं। कुछ विद्वानो का मत हैं की शनिदेव के निर्णय के अनुसार ही अन्य ग्रह संबंधित व्यक्ति को शुभा-शुभ फल प्रदान करते हैं। जड़-चेतन सभी पर ग्रहों का अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव निश्चित पड़ता हैं। आपके मार्गदर्शन हेतु शनिदेव से संबंधित कुछ विशिष्ट जानकारियां यहां प्रस्तुत हैं।

पुरातन काल से लोगों के अंदर शनिदेव के प्रति गलत धारणाएं, भय घर किये बैठा हैं, शनिदेव नाम सुनते ही लोग भयभीत हो जाते हैं। शनिदेव का पौराणिक परिचय आपकी जानकारी हेतु प्रस्तुत हैं जिससे शनिदेव से संबंधी व्याप्त विभिन्न भ्रांतियों के निवारण में आपको सहायता मिले।

विविध पुराणों में शनिदेव के प्रादुर्भाव व उनके विशिष्ट गुणों की अनेक चर्चा उप्लब्ध है।

पुराणो के अनुसार शनिदेव महर्षि कश्यप के पुत्र सूर्य की संतान हैं। सूर्य विश्व की आत्मा व साक्षात ब्रह्म का स्वरूप हैं। शनिदेवकी माता का नाम छाया अथवा सुवर्णा हैं। मनु सावर्णि, यमराज शनिदेव के भाई और यमुना बहन हैं।

शास्त्रोक्त वर्णित हैं की वंश का प्रभाव संतान पर अवश्य पड़ता हैं। शनिदेव का जन्म कश्यप वंश में हुवा हैं और शनिदेव साक्षात ब्रह्मस्वरूप सूर्यदेव के पुत्र हैं अतः शनिदेव अद्वितीय शक्ति व व्यक्तित्व के स्वामी हैं।

शनिदेव आशुतोष भगवान शिव के अनन्य भक्त हैं।

पोराणिक कथा के अनुशार प्रशंगवश सूर्य देव ने अपनी पत्नी अर्थात शनिदेव की मां छाया पर नाराज हो गये और उन्हें शाप तक देने को तैयार हो गये। शनिदेव को सूर्यदेव का ऐसा व्यवहार सहन न हुआ। उनके मन में सूर्य से भी अधिक शक्तिशाली बनने की इच्छा जागृत हुई। शनिदेव ने बिना किसी संकोच सूर्य से ही अपनी शक्तिप्राप्ति के उपाय पूछने लगे।

सूर्यदेव ने सुना कि शनि उनसे अधिक शक्तिशाली होना चाहता है, सुनते ही उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। सब सूर्यदेव ने शनि को काशी में जाकर भगवान शिव का पार्थिवलिंग बनाकर पूजन व अभिषेक करने का आदेश दिया। शनिदेव काशी में आकर पार्थिव शिवलिंग बनाकर उपासना में लिन हो गये। शिवजी ने उनकी उपासना से प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहां। शनि ने शिवजी से दो

वरदान मांगे। एक यह कि मैं अपने पिता से भी अधिक शक्तिशाली बनूं और दूसरा यह कि पिता से सात गुना दूरी पर सात उपग्रहों से घिरा हुआ मेरा मंडल हो। शिवजी ने तथास्तु कह उन्हें वरदान दे दिया।

ज्योतिषशास्त्र में अंतरिक्ष, विरान स्थानों, श्मसानों, बीहड़ वन, प्रांतरों, दुर्गम-घाटियों, पर्वतों, गुफाओं, खदानों व जन शून्य आकाश-पाताल के रहस्यपूर्ण-स्थल आदि को शनिदेव के अधिकार क्षेत्र माना गया है। शनिदेव के अधिकार क्षेत्र में केवल रहस्यमय व गुह्य ज्ञान के उपरांत कर्मक्षेत्र में, सतत् चेष्टा, श्रम, सेवा -लाचार, विकलांगों, रोगी व वृध्दों की सहायता आदि भी आते हैं।

शनिदेव कर्म के कारक ग्रह होने की वजह से मनुष्य को क्रियमाण कर्मो का अवलंबन लेकर अपने पूर्वकृत कर्मो के फल भोग को भी अपने अनुरूप बनाने में सक्षम हो सकता हैं।

ज्योतिषीय विश्लेषण के अनुशार बताये गये उपायों अपना कर प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। ज्योतिष विद्या से मनुष्य अपने भविष्य के विषय में जानकारी प्राप्त कर अपने कत्तव्यों द्वारा प्रतिकूल स्थितियों को अपने अनुकूल बनाने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता हैं।

संपूर्ण चराचर जगत ईश्वरिय शक्तियों के संकल्प से सृजन हुवा हैं। उसी ईश्वरिय शक्तियों की इच्छानुसार नव ग्रहों को विश्व के समस्त जड़-चेतन को नियंत्रित व अनुशासित करने का कार्य दिया गया है। मानव समेत समस्त जीवो को मिलने वाले सुख-दुख ग्रहों के शुभ-अशुभ प्रभावो द्वारा ही प्रदान किये जाते हैं। लेकिन ग्रहो के शुभ-अशुभ प्रभाव में किसी व्यक्ति या जीव विशेष से इन ग्रहो का कोई पक्षपात नहीं होता, क्योकि किसी भी व्यक्ति या जीव को मिलने वाले सुख-दुखों उस जीव द्वारा किये गय कर्म ही होते हैं।

जीव विशेष के कर्मो के कारक ग्रह शनिदेव होने की वजह से उनकी क्रियमाण कर्मों के संपादन में प्रमुख भूमिका होती है। जीव के द्वारा किये गये कर्मों से किसी कर्म का फल कब और किस प्रकार भोगना है, इसका निर्धारण नव ग्रहों द्वारा ही होता हैं। सभी जीव के शुभ-अशुभ कर्मों का फल प्रदान करने में शनिदेव दण्डाधिकारी न्यायाधीश के रूप में कार्य करते हैं। क्योकि अशुभ कर्मों के लिए दण्ड प्रदान करते समय शनि नहीं देर करते है और नहीं पक्षपात। दण्ड देते समय दया आदि भाव शनिदेव को छू नहीं पाते, इस लिये लोगों में शनि के नाम से भय के लहर दौड जाती है। इसी लिये शास्त्रों में शनिदेव को क्रूर, कुटिल व पाप ग्रह संज्ञा दि गई है। शनिदेव जितने कठोर हैं उतने ही अंदर से कृपालु व दयालु भी है। शनिदेव की कृपा प्राप्ति हेतु मनुष्यो को अपने कर्मो को सुधारना चाहिए।

क्योकि विद्वानो के मतानुशार पूर्वजन्म के संचित पुण्य और पापों का फल जीव को वर्तमान जीवन में ग्रहों के अनुसार भोगने पडते हैं।

ग्रहो के शुभ-अशुभ प्रभाव महादशा, अंतर्दशा आदि के अनुशार प्राप्त होते हैं। अतः ग्रहो के अनिष्ट फलों से बचाव के लिए उचित उपाय किया जा सकता है।

हमारे प्राचीन मनीषियों ने शास्त्रो में शनिदेव के अनुकूल व प्रतिकूल प्रभावों का बड़ी सूक्ष्मता से निरीक्षण कर उसकी विस्तृत जानकारी हमें प्रदान की हैं।

यदि किसी जातक के लिये शनिदेव अनुकूल होते हैं तो जातक को अपार धन-वैभव व ऐश्वर्यादि की प्राप्ति होती हैं, यदि प्रतिकूल हो, तो व्यक्ति को भीषण कष्टों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति विशेष के संचित धन, संपदा का नाश होता है। व्यकि निंदित कर्मो रत हो जाता हैं

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

शनि-साढ़ेसाती के शांति उपाय

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

- **"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः"** इस मंत्र का जप प्रतिदिन १०८ बार करने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- श्री शिवलिंग पर ताँबे का सर्प (नाग) चढ़ाने से शनि साढेसाती का अशुभता में कमी आती हैं।
- आक के पौधे पर सात शनिवार तक लोहे की सात कील चढ़ाने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- किसी मंदिर में काले रंग की वस्तुएं एवं सात बादाम सात शनिवार तक लगातार दान करने से शनि की साढेसाती में शनि से संबंधित कष्ट दूर होते हैं।
- हनुमान की पूजा-अर्चना करने से हनुमानजी की प्रतिमा को सिंदूर व तेल चढाने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- शनिवार का व्रत करने से भी शनि के अशुभ प्रभवो में कमी आति हैं।
- शनिवार को किसी हनुमान जी की प्रतिमा को सिंदूर, चमेली का तेल, चांदी के वर्क का चोला चढ़ाए। हनुमानजी को जनेऊ, लाल फूल की माला, लड्डु तथा पान अर्पण करने से साढ़ेसाती से संबंधित कष्टो से छुटकारा मिलता हैं।
- सप्तधान अर्थात सात प्रकार के अन्न का दान करने से व शनिवार को प्रातः पीपल का पूजन कर पीपल के मूल में जल अर्पण करने से भी विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।
- स्नान करते समय लाजवन्ती, लौंग, लोबान, चौलाई, काला तिल, गौर, काली मिर्च, मंगरैला, कुल्थी, गौमूत्र आदि में से पांच या सात या उस्से से अधिक वस्तु जो भी प्राप्त हो उसका चूर्ण बना कर को जल में मिलाकर दक्षिण दिशा की और मुख कर के खड़े होकर स्नान करें। इस जल से स्नान करने के पश्चात् किसी भी तरह का साबुन या तेल का प्रयोग नहीं करें। इस जल को शरीर पर डालने से पूर्व साबुन आदि लगले व शुद्ध पाने से झाग को साफ करने के पश्चयात औषधि मिले जल से स्नान किया जा सकता हैं।
- शनिवार के दिन शनि से संबंदित वस्तुएं जेसे काले उड़द, तेल, काले तिल, लोहे से बनी वस्तु, श्याम वस्त्र आदि का दान देने से शनि पीड़ा का शमन होता हैं।
- एक सूखा नारियल लेकर उसमें चाकू या किल से छोटा सा गोल छेद बना लें। इस छेद में नारियल में आटे का बूरा, बादाम, काजू, किशमिश, पिस्ता, अखरोट या छुआरा मिलाकर नारियल में भरें। नारियल को पुनः बन्द कर किसी पीपल के पास भूमि के अन्दर इस प्रकार गाड़ दें की चीटियां आसानी से तलाश लें, किन्तु अन्य जानवर न पा सकें। घर लौटकर हाथ-पैर धोकर घर में प्रवेश करें। इस प्रकार ८ शनिवार तक यह क्रिया सम्पन्न करने से शनि पीडाका शमन होता हैं।
- शिवलिंग पर कच्चा दूध चढाते हुए **"अमोघ शिव कवच"** का पाठ करने से शनि पीडा शांत होती हैं।
- प्रत्येक शनिवार को मछलियों को जौ के आटे से बनी गोलियाँ खाने को डालने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- प्रतिदिन **शनि वज्रपंजर कवच**, **दशरथ-कृत-शनि-स्तोत्र** अथवा **शनैश्चरस्तवराजः** का नियमित पाठ करने से लाभ प्राप्त होता हैं।

- भोजन करने से पूर्व परोसी गयी थाली में से एक ग्रास निकालकर काले कुत्ते को खिलाएँ अथवा शनिवार को शाम के समय उड़द की दाल के पकौडे व इमरती कुत्ते को खिलाए।
- शनिवार के दिन काले कपड़े में जौ, नारियल, लोहे की चौकोर शीट, काले तिल, कच्चे कोयले व काले चने को पोटली में बांधकर बहते हुए पानी में डालना लाभप्रद होता हैं।
- काली गाय व काले कुत्ते को तेल से चुपड़ी रोटी, चने की दाल व गुड खिलाना लाभप्रद रहता है।
- वट वृक्ष को दूध में शहद व गुड को मिलाकर सींचने से लाभ होता हैं।
- शनिवार, अमावस्या आदि विशेष दिनों पर 'शनि-मन्दिर' में जाकर आक-पर्ण (मदार के पत्ते) एवं पुष्पों की माला मूर्ति पर चढ़ाएँ। एक या आधा चम्मच तेल भी चढ़ाने से लाभ होता है।
- लोहे में बना प्राण-प्रतिष्ठित शनियंत्र प्राप्त करले लें।

शिवलिंग का यथा शक्ति पूजन करें। हो सके, जलाभिषेक करें। पाँच श्वेत पुष्प और एक बिल्व-पत्र चढ़ाएँ। शिव-मन्त्र का जप करें, फिर प्रार्थना करें। यथा- **ॐ श्रीशंकराय नमः। श्रीकैलास-पतये नमः। श्रीपार्वती-पतये नमः। श्रीविघ्न-हर्ताय नमः। श्रीसुख-दात्रे नमः। ॐ शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!**

इस प्रकार प्रार्थना के शिवलिंग के सामने एक नारियल और एक मुठ्ठी गेहूँ रखें। नमस्कार कर घर वापस आएँ।

शनि एवं शनि-भार्या-स्तोत्र का नित्य तीन पाठ करने से **'शनि-ग्रह'** की पीड़ा निश्चय की दूर होती है।

॥श्रीशनिरक्षास्तवः॥

॥पूर्वपीठिका॥

श्रीनारद उवाचः

ध्यात्वा गणपतिम् राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः।
धीरः शनैश्चरस्येमम् चकार स्तवमुत्तमम्॥

॥मूलपाठः॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीशनिस्तवराजस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः।
गायत्री छन्दः। श्रीशनैश्वर देवता । श्रीशनैश्वरप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः॥

ऋष्यादिन्यासः

शिरसि सिन्धुद्वीपर्षये नमः। मुखे गायत्रीछन्दसे नमः।
हृदि श्रीशनैश्वरदेवतायै नमः।
सर्वाङ्गे श्रीशनैश्वरप्रीत्यर्थे विनियोगाय नमः॥

॥स्तवः॥

शिरो मे भास्करिः पातु भालं छायासुतोऽवतु ।
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकण्ठनिभः श्रुती॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं बलिमुखोऽवतु ।
स्कन्धौ संवर्तकः पातु भुजो मे भयदोऽवतु॥
सौरिर्मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु ।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रविनन्दनः॥
पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपुः॥

॥फलश्रुतिः॥

रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरेर्नामाबलैर्युतम् ।
सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नात्र संशयः॥
॥ इति श्रीशनिरक्षास्तवः ॥

॥शनि-भार्या-स्तोत्र॥

यः पुरा राज्य-भ्रष्टाय, नलाय प्रददो किल।
स्वप्ने शौरिः स्वयं, मन्त्रं सर्व-काम-फल-प्रदम्॥१॥
क्रोडं नीलाञ्जन-प्रख्यं, नील-जीमूत-सन्निभम्।
छाया-मार्तण्ड-सम्भूतं, नमस्यामि शनैश्चरम्॥२॥
ॐ नमोऽर्क-पुत्राय शनैश्चराय, नीहार-वर्णाञ्जन-नीलकाय।
स्मृत्वा रहस्यं भुवि मानुषत्वे,फल-प्रदो मेभव सूर्य-पुत्र॥३॥
नमोऽस्तु प्रेत-राजाय, कृष्ण-वर्णाय ते नमः।
शनैश्चराय क्रूराय, सिद्धि-बुद्धि प्रदायिने॥४॥
य एभिर्नामभिः स्तौति, तस्य तुष्टो भवाम्यहम्।
मामकानां भयं तस्य, स्वप्नेष्वपि न जायते॥५॥

गार्गेय कौशिकस्यापि, पिप्लादो महामुनिः।
शनैश्चर-कृता पीड़ा, न भवति कदाचन॥६॥
क्रोडस्तु पिंगलो बभ्रुः, कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
शौरिः शनैश्चरो मन्दः, पिप्लादेन संयुतः॥७॥
एतानि शनि-नामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
तस्य शौरेः कृता पीड़ा, न भवति कदाचन॥८॥
ध्वजनी धामनी चैव, कंकाली कलह-प्रिया।
कलही कण्टकी चापि, अजा महिषी तुरगंमा॥९॥
नामानि शनि-भार्यायाः, नित्यं जपति यः पुमान्।
तस्य दुःखा विनश्यन्ति, सुख-सौभाग्यं वर्द्धते॥१०॥

॥श्रीशनैश्चरमालामन्त्रः॥

अथ विनियोगः-

अस्य श्रीशनैश्चरमालामन्त्रस्य काश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजं, निं शक्तिः, मं कीलकं, समस्तपीडा परिहारार्थे शनैश्चरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

अथ कर-न्यासः

शनैश्चराय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, कृष्णवर्णाय तर्जनीभ्यां नमः, सूर्यपुत्राय मध्यमाभ्यां नमः, मन्दगतये अनामिकाभ्यां नमः, गृध्रवाहनाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, पङ्गुपादाय करतल- करपृष्ठाभ्यां नमः, एवं हृदयादि न्यासः॥ इति करन्यासः।

अथ हृदयादि-न्यासः

अथ हृदयादिषडङ्गन्यासः। शनैश्चराय हृदयाय नमः। कृष्णवर्णाय शिरसे स्वाहा। सूर्यपुत्राय शिखायै वषट्। मन्दगतये कवचाय हुम्। गृध्रवाहनाय नेत्रत्रयाय वौषट्। पङ्गुपादाय अस्त्राय फट्। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः॥

अथ ध्यानम्।

दोर्भिर्धनुर्द्विशिखचर्मधरं त्रिशूलं भास्वत्किरीट मुकुटोज्ज्वलितेन्द्रनीलम् । नीलातपत्रकुसुमादिसुगन्धभूषं देवं भजे रविसुतं प्रणतोऽस्मि नित्यम् ॥

ॐ नमो भगवते शनैश्चराय मन्दगतये सूर्यपुत्राय महाकालाग्नि- सदृशाय क्रूर (कृश) देहाय गृध्रासनाय नीलरूपाय चतुर्भुजाय त्रिनेत्राय नीलाम्बरधराय नीलमालाविभूषिताय धनुराकारमण्डले प्रतिष्ठिताय काश्यपगोत्रात्मजाय माणिक्यमुक्ताभरणाय छायापुत्राय सकलमहारौद्राय सकलजगत्भयङ्कराय पङ्कुपादाय क्रूररूपाय देवासुरभयङ्कराय सौरये कृष्णवर्णाय स्थूलरोमाय अधोमुखाय नीलभद्रासनाय नीलवर्णरथारूडाय त्रिशूलधराय सर्वजनभयङ्कराय मन्दाय दं, शं, नं, मं, हुं, रक्ष रक्ष, मम शत्रून्नाशय, सर्वपीडा नाशय नाशय, विषमस्थशनैश्चरान् सुप्रीणय सुप्रीणय, सर्वज्वरान् शमय शमय, समस्तव्याधीनामोचय मोचय विमोचय, मां रक्ष रक्ष, समस्त दुष्टग्रहान् भक्षय भक्ष्य, भ्रामय भ्रामय, त्रासय त्रासय, बन्धय बन्धय, उन्मादयोन्मादय, दीपय दीपय, तापय तापय, सर्वविघ्नान् छिन्धि छिन्धि, डाकिनीशाकिनीभूतवेतालयक्षरक्षोगन्धर्वग्रहान् ग्रासय ग्रासय, भक्षय भक्षय, दह दह, पच पच, हन हन, विदारय विदारय, शत्रून् नाशय नाशय, सर्वपीडा नाशय नाशय, विषमस्थशनैश्चरान् सुप्रीईणय सुप्रीणय, सर्वज्वरान् शमय शमय, समस्तव्याधीन् विमोचय विमोचय, ॐ शं नं मं ह्रां फं हुं, शनैश्चराय नीलाभ्रवर्णाय नीलमेखलय सौरये नमः॥

॥श्री शनैश्चर सहस्रनाम स्तोत्रम्॥

अथ विनियोगः

ॐ अस्य श्रीशनैश्चरसहस्रनामस्तोत्र महामन्त्रस्य। काश्यप ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः । शनैश्चरो देवता। शम् बीजम्। नम् शक्तिः। मम् कीलकम्। शनैश्चरप्रसादासिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ कर-न्यासः

शनैश्चराय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः। अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः। सौरये अनामिकाभ्यां नमः। शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। छायात्मजाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादि-न्यासः

अथ हृदयादिषडङ्गन्यासः। शनैश्चराय हृदयाय नमः। मन्दगतये शिरसे स्वाहा। अधोक्षजाय शिखायै वषट्। सौरये कवचाय हुम्। शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्। छायात्मजाय अस्त्राय फट्। भूर्भुवः सुवरोमिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम्:

चापासनो गृध्रधरस्तु नीलः प्रत्यङ्मुखः काश्यप गोत्रजातः।
सशूलचापेषु गदाधरोऽव्यात् सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च शौरिः॥

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रासनस्थो विकृताननश्च।
केयूरहारादिविभूषिताङ्गः सदाऽस्तु मे मन्दगतिः प्रसन्नः॥

ॐ ॥अमिताभाष्यघहरः अशेषदुरितापहः।
अघोररूपोऽतिदीर्घकायोऽशेषभयानकः॥१॥
अनन्तो अन्नदाता चाश्वत्थमूलजपप्रियः।
अतिसम्पत्प्रदोऽमोघः अन्यस्तुत्या प्रकोपितः॥२॥
अपराजितो अद्वितीयः अतितेजोऽभयप्रदः।
अष्टमस्थोऽञ्जननिभः अखिलात्मार्कनन्दनः॥३॥
अतिदारुण अक्षोभ्यः अप्सरोभिः प्रपूजितः।
अभीष्टफलदोऽरिष्टमथनोऽमरपूजितः॥४॥
अनुग्राह्यो अप्रमेय पराक्रम विभीषणः।
असाध्ययोगो अखिल दोषघ्नः अपराकृतः॥५॥
अप्रमेयोऽतिसुखदः अमराधिपपूजितः ।
अवलोकात् सर्वनाशः अश्वत्थाम द्विरायुधः ॥६॥
अपराधसहिष्णुश्च अश्वत्थाम सुपूजितः ।
अनन्तपुण्यफलदो अतृप्तोऽतिबलोऽपि च ॥७॥
अवलोकात् सर्ववन्द्यः अक्षीणकरुणानिधिः ।
अविद्यामूलनाशश्च अक्षय्यफलदायकः ॥८॥
आनन्दपरिपूर्णश्च आयुष्कारक एव च ।
आश्रितेष्टार्थवरदः आधिव्याधिहरोऽपि च ॥९॥
आनन्दमय आनन्दकरो आयुधधारकः ।
आत्मचक्राधिकारी च आत्मस्तुत्यपरायणः ॥१०॥

आयुष्करो आनुपूर्व्यः आत्मायत्तजगत्त्रयः ।
आत्मनामजपप्रीतः आत्माधिकफलप्रदः ॥११॥
आदित्यसंभवो आर्तिभञ्जनो आत्मरक्षकः ।
आपद्बान्धव आनन्दरूपो आयुःप्रदोऽपि च ॥१२॥
आकर्णपूर्णचापश्च आत्मोद्दिष्ट द्विजप्रदः ।
आनुकूल्यो आत्मरूप प्रतिमादान सुप्रियः ॥१३॥
आत्मारामो आदिदेवो आपन्नार्ति विनाशनः ।
इन्दिरार्चितपादश्च इन्द्रभोगफलप्रदः ॥१४॥
इन्द्रदेवस्वरूपश्च इष्टेष्टवरदायकः ।
इष्टापूर्तिप्रद इन्दुमतीष्टवरदायकः ॥१५॥

इन्दिरारमणप्रीत इन्द्रवंशनृपार्चितः ।
इहामुत्रेष्टफलद इन्दिरारमणार्चितः ॥१६॥
ईद्रिय ईश्वरप्रीत ईषणात्रयवर्जितः ।
उमास्वरूप उद्बोध्य उशना उत्सवप्रियः ॥१७॥
उमादेव्यर्चनप्रीत उच्चस्थोच्चफलप्रदः ।
उरुप्रकाश उच्चस्थ योगद उरुपराक्रमः ॥१८॥
ऊर्ध्वलोकादिसञ्चारी ऊर्ध्वलोकादिनायकः ।
ऊर्जस्वी ऊनपादश्च ऋकाराक्षरपूजितः ॥१९॥
ऋषिप्रोक्त पुराणज्ञ ऋषिभिः परिपूजितः ।
ऋग्वेदवन्द्य ऋग्रूपी ऋजुमार्ग प्रवर्तकः ॥२०॥

लुळितोद्धारको लूत भवपाशप्रभञ्जनः ।
लूकाररूपको लब्धधर्ममार्गप्रवर्तकः ॥२१॥
एकाधिपत्यसाम्राज्यप्रद एनौघनाशनः ।
एकपाद्येक एकोनविंशतिमासभुक्तिदः ॥२२॥
एकोनविंशतिवर्षदश एणाङ्कपूजितः ।
ऐश्वर्यफलद ऐन्द्र ऐरावतसुपूजितः ॥२३॥

ओंकार जपसुप्रीत ओंकार परिपूजितः ।
ओंकारबीज औदार्य हस्त औन्नत्यदायकः ॥२४॥
औदार्यगुण औदार्य शील औषधकारकः ।
करपङ्कजसन्नद्धधनुश्च करुणानिधिः ॥२५॥

कालः कठिनचित्तश्च कालमेघसमप्रभः ।
किरीटी कर्मकृत् कारयिता कालसहोदरः ॥२६॥
कालाम्बरः काकवाहः कर्मठः काश्यपान्वयः ।
कालचक्रप्रभेदी च कालरूपी च कारणः ॥२७॥
कारिमूर्तिः कालभर्ता किरीटमकुटोज्वलः ।
कार्यकारण कालज्ञः काञ्चनाभरथान्वितः ॥२८॥
कालदंष्ट्रः क्रोधरूपः कराळी कृष्णकेतनः ।
कालात्मा कालकर्ता च कृतान्तः कृष्णगोप्रियः ॥२९॥
कालाग्निरुद्ररूपश्च काश्यपात्मजसम्भवः ।
कृष्णवर्णहयश्चैव कृष्णगोक्षीरसुप्रियः ॥३०॥

कृष्णगोघृतसुप्रीतः कृष्णगोदधिषुप्रियः ।
कृष्णगावैकचित्तश्च कृष्णगोदानसुप्रियः ॥३१॥
कृष्णगोदत्तहृदयः कृष्णगोरक्षणप्रियः ।
कृष्णगोग्रासचित्तस्य सर्वपीडानिवारकः ॥३२॥
कृष्णगोदान शान्तस्य सर्वशान्ति फलप्रदः ।
कृष्णगोस्नान कामस्य गङ्गास्नान फलप्रदः ॥३३॥
कृष्णगोरक्षणस्याशु सर्वाभीष्टफलप्रदः ।
कृष्णगावप्रियश्चैव कपिलापशुषु प्रियः ॥३४॥
कपिलाक्षीरपानस्य सोमपानफलप्रदः ।
कपिलादानसुप्रीतः कपिलाज्यहुतप्रियः ॥३५॥

कृष्णश्च कृत्तिकान्तस्थः कृष्णगोवत्ससुप्रियः ।
कृष्णमाल्याम्बरधरः कृष्णवर्णतनूरुहः ॥३६॥
कृष्णकेतुः कृशकृष्णदेहः कृष्णाम्बरप्रियः ।
क्रूरचेष्टः क्रूरभावः क्रूरदंष्ट्रः कुरूपि च ॥३७॥
कमलापति संसेव्यः कमलोद्भवपूजितः ।
कामितार्थप्रदः कामधेनु पूजनसुप्रियः ॥३८॥
कामधेनुसमाराध्यः कृपायुष विवर्धनः ।
कामधेन्वैकचित्तश्च कृपराज सुपूजितः ॥३९॥
कामदोग्धा च क्रुद्धश्च कुरुवंशसुपूजितः ।
कृष्णाङ्गमहिषीदोग्धा कृष्णेन कृतपूजनः ॥४०॥

कृष्णाङ्गमहिषीदानप्रियः कोणस्थ एव च ।
कृष्णाङ्गमहिषीदानलोलुपः कामपूजितः ॥४१॥

क्रूरावलोकनात्सर्वनाशः कृष्णाङ्गदप्रियः ।
खद्योतः खण्डनः खड्गधरः खेचरपूजितः ॥४२॥
खरांशुतनयश्चैव खगानां पतिवाहनः ।
गोसवासक्तहृदयो गोचरस्थानदोषहृत् ॥४३॥
गृहराश्याधिपश्चैव गृहराज महाबलः ।
गृध्रवाहो गृहपतिर्गोचरो गानलोलुपः ॥४४॥
घोरो घर्मो घनतमा घर्मी घनकृपान्वितः ।
घननीलाम्बरधरो ङादिवर्ण सुसंज्ञितः ॥४५॥

चक्रवर्तिसमाराध्यश्चन्द्रमत्या समर्चितः ।
चन्द्रमत्यार्तिहारी च चराचर सुखप्रदः ॥४६॥
चतुर्भुजश्चापहस्तश्चराचरहितप्रदः ।
छायापुत्रश्छत्रधरश्छायादेवीसुतस्तथा ॥४७॥
जयप्रदो जगन्नीलो जपतां सर्वसिद्धिदः ।
जपविध्वस्तविमुखो जम्भारिपरिपूजितः ॥४८॥
जम्भारिवन्द्यो जयदो जगज्जनमनोहरः ।
जगत्त्रयप्रकुपितो जगत्त्राणपरायणः ॥४९॥
जयो जयप्रदश्चैव जगदानन्दकारकः ।
ज्योतिश्च ज्योतिषां श्रेष्ठो ज्योतिःशास्त्र प्रवर्तकः ॥५०॥

झर्झरीकृतदेहश्च झल्लरीवाद्यसुप्रियः ।
ज्ञानमूर्तिर्ज्ञानगम्यो ज्ञानी ज्ञानमहानिधिः ॥५१॥
ज्ञानप्रबोधकश्चैव ज्ञानदृष्ट्यावलोकितः ।
टङ्किताखिललोकश्च टङ्कितैनस्तमोरविः ॥५२॥
टङ्कारकारकश्चैव टङ्कृतो टाम्भदप्रियः ।
ठकारमय सर्वस्वष्ठकारकृतपूजितः ॥५३॥
ढक्कावाद्यप्रीतिकरो डमड्डमरुकप्रियः ।
डम्बरप्रभवो डम्भो ढक्कानादप्रियङ्करः ॥५४॥
डाकिनी शाकिनी भूत सर्वोपद्रवकारकः ।
डाकिनी शाकिनी भूत सर्वोपद्रवनाशकः ॥५५॥

ढकाररूपो ढाम्भीको णकारजपसुप्रियः ।
णकारमयमन्त्रार्थो णकारैकशिरोमणिः ॥५६॥
णकारवचनानन्दो णकारकरुणामयः ।
णकारमय सर्वस्वो णकारैकपरायणः ॥५७॥
तर्जनीधृतमुद्रश्च तपसां फलदायकः ।
त्रिविक्रमनुतश्चैव त्रयीमयवपुर्धरः ॥५८॥
तपस्वी तपसा दग्धदेहस्ताम्राधरस्तथा ।
त्रिकालवेदितव्यश्च त्रिकालमतितोषितः ॥५९॥

तुलोच्चयस्त्रासकरस्तिलतैलप्रियस्तथा ।
तिलान्न सन्तुष्टमनास्तिलदानप्रियस्तथा ॥६०॥

तिलभक्ष्यप्रियश्चैव तिलचूर्णप्रियस्तथा ।
तिलखण्डप्रियश्चैव तिलापूपप्रियस्तथा ॥६१॥
तिलहोमप्रियश्चैव तापत्रयनिवारकः ।
तिलतर्पणसन्तुष्टस्तिलतैलान्नतोषितः ॥६२॥
तिलैकदत्तहृदयस्तेजस्वी तेजसान्निधिः ।
तेजसादित्यसङ्काशस्तेजोमय वपुर्धरः ॥६३॥
तत्त्वज्ञस्तत्त्वगस्तीव्रस्तपोरूपस्तपोमयः ।
तुष्टिदस्तुष्टिकृत् तीक्ष्णस्त्रिमूर्तिस्त्रिगुणात्मकः ॥६४॥
तिलदीपप्रियश्चैव तस्य पीडानिवारकः ।
तिलोत्तमामेनकादिनर्तनप्रिय एव च ॥६५॥

त्रिभागमष्टवर्गश्च स्थूलरोमा स्थिरस्तथा ।
स्थितः स्थायी स्थापकश्च स्थूलसूक्ष्मप्रदर्शकः ॥६६॥
दशरथार्चितपादश्च दशरथस्तोत्रतोषितः ।
दशरथ प्रार्थनाक्लृप्त दुर्भिक्ष विनिवारकः ॥६७॥
दशरथ प्रार्थनाक्लृप्त वरद्वय प्रदायकः ।
दशरथस्वात्मदर्शी च दशरथाभीष्टदायकः ॥६८॥
दोर्भिर्धनुर्धरश्चैव दीर्घश्मश्रुजटाधरः ।
दशरथस्तोत्रवरदो दशरथाभीप्सितप्रदः ॥६९॥
दशरथस्तोत्रसन्तुष्टो दशरथेन सुपूजितः ।
द्वादशाष्टमजन्मस्थो देवपुङ्गवपूजितः ॥७०॥

देवदानवदर्पघ्नो दिनं प्रतिमुनिस्तुतः ।
द्वादशस्थो द्वादशात्मा सुतो द्वादश नामभृत् ॥७१॥
द्वितीयस्थो द्वादशार्कसूनुर्दैवज्ञपूजितः ।
दैवज्ञचित्तवासी च दमयन्त्या सुपूजितः ॥७२॥
द्वादशाब्दंतु दुर्भिक्षकारी दुःस्वप्ननाशनः ।
दुराराध्यो दुराधर्षो दमयन्ती वरप्रदः ॥७३॥
दुष्टदूरो दुराचार शमनो दोषवर्जितः ।
दुःसहो दोषहन्ता च दुर्लभो दुर्गमस्तथा ॥७४॥
दुःखप्रदो दुःखहन्ता दीप्तरञ्जित दिङ्मुखः ।
दीप्यमान मुखाम्भोजो दमयन्त्याः शिवप्रदः ॥७५॥

दुर्निरीक्ष्यो दृष्टमात्र दैत्यमण्डलनाशकः ।
द्विजदानैकनिरतो द्विजाराधनतत्परः ॥७६॥
द्विजसर्वार्तिहारी च द्विजराज समर्चितः ।
द्विजदानैकचित्तश्च द्विजराज प्रियङ्करः ॥७७॥
द्विजो द्विजप्रियश्चैव द्विजराजेष्टदायकः ।
द्विजरूपो द्विजश्रेष्ठो दोषदो दुःसहोऽपि च ॥७८॥
देवादिदेवो देवेशो देवराज सुपूजितः ।
देवराजेष्ट वरदो देवराज प्रियङ्करः ॥७९॥
देवादिवन्दितो दिव्यतनुर्देवशिखामणिः ।
देवगानप्रियश्चैव देवदेशिकपुङ्गवः ॥८०॥

द्विजात्मजासमाराध्यो ध्येयो धर्मी धनुर्धरः ।
धनुष्मान् धनदाता च धर्माधर्मविवर्जितः ॥८१॥
धर्मरूपो धनुर्दिव्यो धर्मशास्त्रात्मचेतनः ।
धर्मराज प्रियकरो धर्मराज सुपूजितः ॥८२॥
धर्मराजेष्टवरदो धर्माभीष्टफलप्रदः ।
नित्यतृप्तस्वभावश्च नित्यकर्मरतस्तथा ॥८३॥
निजपीडार्तिहारी च निजभक्तेष्टदायकः ।
निर्मासदेहो नीलश्च निजस्तोत्र बहुप्रियः ॥८४॥
नळस्तोत्र प्रियश्चैव नळराजसुपूजितः ।
नक्षत्रमण्डलगतो नमतां प्रियकारकः ॥८५॥

नित्यार्चितपदाम्भोजो निजाज्ञा परिपालकः ।
नवग्रहवरो नीलवपुर्नळकरार्चितः ॥८६॥
नळप्रियानन्दितश्च नळक्षेत्रनिवासकः ।
नळपाक प्रियश्चैव नळपद्भञ्जनक्षमः ॥८७॥
नळसर्वार्तिहारी च नळेनात्मार्थपूजितः ।
निपाटवीनिवासश्च नळाभीष्टवरप्रदः ॥८८॥
नळतीर्थसकृत् स्नान सर्वपीडानिवारकः ।
नळेशदर्शनस्याशु साम्राज्यपदवीप्रदः ॥८९॥
नक्षत्राराश्यधिपश्च नीलध्वजविराजितः ।
नित्ययोगरतश्चैव नवरत्नविभूषितः ॥९०॥

नवधा भज्यदेहश्च नवीकृतजगत्त्रयः ।
नवग्रहाधिपश्चैव नवाक्षरजपप्रियः ॥९१॥
नवात्मा नवचक्रात्मा नवतत्त्वाधिपस्तथा ।
नवोदन प्रियश्चैव नवधान्यप्रियस्तथा ॥९२॥
निष्कण्टको निस्पृहश्च निरपेक्षो निरामयः ।
नागराजार्चितपदो नागराजप्रियङ्करः ॥९३॥
नागराजेष्टवरदो नागाभरण भूषितः ।
नागेन्द्रगान निरतो नानाभरणभूषितः ॥९४॥
नवमित्र स्वरूपश्च नानाश्चर्यविधायकः ।
नानाद्वीपाधिकर्ता च नानालिपिसमावृतः ॥९५॥

नानारूप जगत् स्रष्टा नानारूपजनाश्रयः ।
नानालोकाधिपश्चैव नानाभाषाप्रियस्तथा ॥९६॥
नानारूपाधिकारी च नवरत्नप्रियस्तथा ।
नानाविचित्रवेषाढ्यो नानाचित्र विधायकः ॥९७॥
नीलजीमूतसङ्काशो नीलमेघसमप्रभः ।
नीलाञ्जनचयप्रख्यो नीलवस्त्रधरप्रियः ॥९८॥
नीचभाषा प्रचारज्ञो नीचे स्वल्पफलप्रदः ।
नानागम विधानज्ञो नानानृपसमावृतः ॥९९॥
नानावर्णाकृतिश्चैव नानावर्णस्वरार्तवः ।
नागलोकान्तवासी च नक्षत्रत्रयसंयुतः ॥१००॥

नभादिलोकसम्भूतो नामस्तोत्रबहुप्रियः ।
नामपारायणप्रीतो नामार्चनवरप्रदः ॥१०१॥
नामस्तोत्रैकचित्तश्च नानारोगार्तिभञ्जनः ।
नवग्रहसमाराध्यो नवग्रह भयापहः ॥१०२॥
नवग्रहसुसम्पूज्यो नानावेद सुरक्षकः ।
नवग्रहाधिराजश्च नवग्रहजपप्रियः ॥१०३॥
नवग्रहमयज्योतिर्नवग्रह वरप्रदः ।
नवग्रहाणामधिपो नवग्रह सुपीडितः ॥१०४॥
नवग्रहाधीश्वरश्च नवमाणिक्यशोभितः ।
परमात्मा परब्रह्म परमैश्वर्यकारणः ॥१०५॥

प्रपन्नभयहारी च प्रमत्तासुरशिक्षकः ।
प्रासहस्तः पङ्गुपादः प्रकाशात्मा प्रतापवान् ॥१०६॥
पावनः परिशुद्धात्मा पुत्रपौत्र प्रवर्धनः ।
प्रसन्नात्सर्वसुखदः प्रसन्नेक्षण एव च ॥१०७॥
प्रजापत्यः प्रियकरः प्रणतेप्सितराज्यदः ।
प्रजानां जीवहेतुश्च प्राणिनां परिपालकः ॥१०८॥
प्राणरूपी प्राणधारी प्रजानां हितकारकः ।
प्राज्ञः प्रशान्तः प्रज्ञावान् प्रजारक्षणदीक्षितः ॥१०९॥
प्रावृषेण्यः प्राणकारी प्रसन्नोत्सववन्दितः ।
प्रज्ञानिवासहेतुश्च पुरुषार्थैकसाधनः ॥११०॥

प्रजाकरः प्रातिकूल्यः पिङ्गळाक्षः प्रसन्नधीः ।
प्रपञ्चात्मा प्रसविता पुराण पुरुषोत्तमः ॥१११॥
पुराण पुरुषश्चैव पुरुहूतः प्रपञ्चधृत् ।
प्रतिष्ठितः प्रीतिकरः प्रियकारी प्रयोजनः ॥११२॥
प्रीतिमान् प्रवरस्तुत्यः पुररवसमर्चितः ।
प्रपञ्चकारी पुण्यश्च पुरुहूत समर्चितः ॥११३॥

पाण्डवादि सुसंसेव्य प्रणवः पुरुषार्थदः ।
पयोदसमवर्णश्च पाण्डुपुत्रार्तिभञ्जनः ॥११४॥
पाण्डुपुत्रेष्टदाता च पाण्डवानां हितङ्करः ।
पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥११५॥

पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वारिष्ट निवारकः ।
पाण्डुपुत्राद्यर्चितश्च पूर्वजश्च प्रपञ्चभृत् ॥११६॥
परचक्रप्रभेदी च पाण्डवेषु वरप्रदः ।
परब्रह्म स्वरूपश्च पराज्ञा परिवर्जितः ॥११७॥
परात्परः पाशहन्ता परमाणुः प्रपञ्चकृत् ।
पातङ्गी पुरुषाकारः परशम्भुसमुद्भवः ॥११८॥
प्रसन्नात्सर्वसुखदः प्रपञ्चोद्भवसम्भवः ।
प्रसन्नः परमोदारः परहङ्कारभञ्जनः ॥११९॥
परः परमकारुण्यः रब्रह्ममयस्तथा ।
प्रपन्नभयहारी च प्रणतार्तिहरस्तथा ॥१२०॥

प्रसादकृत् प्रपञ्चश्च पराशक्ति समुद्भवः ।
प्रदानपावनश्चैव प्रशान्तात्मा प्रभाकरः ॥१२१॥
प्रपञ्चात्मा प्रपञ्चोपशमनः पृथिवीपतिः ।
परशुराम समाराध्यः परशुरामवरप्रदः ॥१२२॥
परशुराम चिरञ्जीविप्रदः परमपावनः ।
परमहंसस्वरूपश्च परमहंससुपूजितः ॥१२३॥
पञ्चनक्षत्राधिपश्च पञ्चनक्षत्रसेवितः ।
प्रपञ्च रक्षितश्चैव प्रपञ्चस्य भयङ्करः ॥१२४॥
फलदानप्रियश्चैव फलहस्तः फलप्रदः ।
फलाभिषेकप्रियश्च फल्गुनस्य वरप्रदः ॥१२५॥

फुटच्छमित पापौघः फल्गुनेन प्रपूजितः ।
फणिराजप्रियश्चैव फुल्लाम्बुज विलोचनः ॥१२६॥
बलिप्रियो बली बभ्रुर्ब्रह्मविष्णवीश क्लेशकृत् ।
ब्रह्मविष्ण्वीशरूपश्च ब्रह्मशक्रादिदुर्लभः ॥१२७॥
बासदष्ट्र्या प्रमेयाङ्गो बिभ्रत्कवचकुण्डलः ।
बहुश्रुतो बहुमतिर्ब्रह्मण्यो ब्राह्मणप्रियः ॥१२८॥
बलप्रमथनो ब्रह्मा बहुरूपो बहुप्रदः ।
बालार्कद्युतिमान्बालो बृहद्वक्षा बृहत्तनुः ॥१२९॥
ब्रह्माण्डभेदकृच्चैव भक्तसर्वार्थसाधकः ।
भव्यो भोक्ता भीतिकृच्च भक्तानुग्रहकारकः ॥१३०॥

भीषणो भैक्षकारी च भूसुरादि सुपूजितः ।
भोगभाग्यप्रदश्चैव भस्मीकृत जगत्त्रयः ॥१३१॥

भयानको भानुसूनुर्भूतिभूषित विग्रहः ।
भास्वद्रतो भक्तिमतां सुलभो भ्रुकुटीमुखः ॥१३२॥
भवभूत गणैःस्तुत्यो भूतसंघसमावृतः ।
भ्राजिष्णुर्भगवान्भीमो भक्ताभीष्टवरप्रदः ॥१३३॥
भवभक्तैकचित्तश्च भक्तिगीतस्तवोन्मुखः ।
भूतसन्तोषकारी च भक्तानां चित्तशोधनः ॥१३४॥
भक्तिगम्यो भयहरो भावज्ञो भक्तसुप्रियः ।
भूतिदो भूतिकृद् भोज्यो भूतात्मा भुवनेश्वरः ॥१३५॥

मन्दो मन्दगतिश्चैव मासमेव प्रपूजितः ।
मुचुकुन्द समाराध्यो मुचुकुन्द वरप्रदः ॥१३६॥
मुचुकुन्दार्चितपदो महारूपो महायशाः ।
महाभोगी महायोगी महाकायो महाप्रभुः ॥१३७॥
महेशो महदैश्वर्यो मन्दार कुसुमप्रियः ।
महाक्रतुर्महामानी महाधीरो महाजयः ॥१३८॥
महावीरो महाशान्तो मण्डलस्थो महाद्युतिः ।
महासुतो महोदारो महनीयो महोदयः ॥१३९॥
मैथिलीवरदायी च मार्ताण्डस्य द्वितीयजः ।
मैथिलीप्रार्थनाक्लृप्त दशकण्ठ शिरोपहृत् ॥१४०॥

मरामरहराराध्यो महेन्द्रादि सुरार्चितः ।
महारथो महावेगो मणिरत्नविभूषितः ॥१४१॥
मेषनीचो महाघोरो महासौरिर्मनुप्रियः ।
महादीर्घो महाग्रासो महदैश्वर्यदायकः ॥१४२॥
महाशुष्को महारौद्रो मुक्तिमार्ग प्रदर्शकः ।
मकरकुम्भाधिपश्चैव मृकण्डुतनयार्चितः ॥१४३॥
मन्त्राधिष्ठानरूपश्च मल्लिकाकुसुमप्रियः ।
महामन्त्र स्वरूपश्च महायन्त्रस्थितस्तथा ॥१४४॥
महाप्रकाशदिव्यात्मा महादेवप्रियस्तथा ।
महाबलि समाराध्यो महर्षिगणपूजितः ॥१४५॥

मन्दचारी महामायी माषदानप्रियस्तथा ।
माषोदन प्रीतचित्तो महाशक्तिर्महागुणः ॥१४६॥
यशस्करो योगदाता यज्ञाङ्गोऽपि युगन्धरः ।
योगी योग्यश्च याम्यश्च योगरूपी युगाधिपः ॥१४७॥
यज्ञभृद् यजमानश्च योगो योगविदां वरः ।
यक्षराक्षसवेताळ कूष्माण्डादिप्रपूजितः ॥१४८॥
यमप्रत्यधिदेवश्च युगपद् भोगदायकः ।
योगप्रियो योगयुक्तो यज्ञरूपो युगान्तकृत् ॥१४९॥

रघुवंश समाराध्यो रौद्रो रौद्राकृतिस्तथा ।
रघुनन्दन सल्लापो रघुप्रोक्त जपप्रियः ॥१५०॥

रौद्ररूपी रथारूढो राघवेष्ट वरप्रदः ।
रथी रौद्राधिकारी च राघवेण समर्चितः ॥१५१॥
रोषात्सर्वस्वहारी च राघवेण सुपूजितः ।
राशिद्वयाधिपश्चैव रघुभिः परिपूजितः ॥१५२॥
राज्यभूपाकरश्चैव राजराजेन्द्र वन्दितः ।
रत्नकेयूरभूषाढ्यो रमानन्दनवन्दितः ॥१५३॥
रघुपौरुषसन्तुष्टो रघुस्तोत्रबहुप्रियः ।
रघुवंशनृपैःपूज्यो रणन्मञ्जीरनूपुरः ॥१५४॥
रविनन्दन राजेन्द्रो रघुवंशप्रियस्तथा ।
लोहजप्रतिमादानप्रियो लावण्यविग्रहः ॥१५५॥

लोकचूडामणिश्चैव लक्ष्मीवाणीस्तुतिप्रियः ।
लोकरक्षो लोकशिक्षो लोकलोचनरञ्जितः ॥१५६॥
लोकाध्यक्षो लोकवन्द्यो लक्ष्मणाग्रजपूजितः ।
वेदवेद्यो वज्रदेहो वज्राङ्कुशधरस्तथा ॥१५७॥
विश्ववन्द्यो विरूपाक्षो विमलाङ्गविराजितः ।
विश्वस्थो वायसारूढो विशेषसुखकारकः ॥१५८॥
विश्वरूपी विश्वगोप्ता विभावसु सुतस्तथा ।
विप्रप्रियो विप्ररूपो विप्राराधन तत्परः ॥१५९॥
विशालनेत्रो विशिखो विप्रदानबहुप्रियः ।
विश्वसृष्टि समुद्भूतो वैश्वानरसमद्युतिः ॥१६०॥

विष्णुर्विरिञ्चिर्विश्वेशो विश्वकर्ता विशाम्पतिः ।
विराडाधारचक्रस्थो विश्वभुग्विश्वभावनः ॥१६१॥
विश्वव्यापारहेतुश्च वक्रक्रूरविवर्जितः ।
विश्वोद्भवो विश्वकर्मा विश्वसृष्टि विनायकः ॥१६२॥
विश्वमूलनिवासी च विश्वचित्रविधायकः ।
विश्वाधारविलासी च व्यासेन कृतपूजितः ॥१६३॥
विभीषणेष्टवरदो वाञ्छितार्थप्रदायकः ।
विभीषणसमाराध्यो विशेषसुखदायकः ॥१६४॥
विषमव्ययाष्टजन्मस्थोऽप्येकादशफलप्रदः ।
वासवात्मजसुप्रीतो वसुदो वासवार्चितः ॥१६५॥

विश्वत्राणैकनिरतो वाङ्मनोतीतविग्रहः ।
विराण्मन्दिरमूलस्थो वलीमुखसुखप्रदः ॥१६६॥
विपाशो विगतातङ्को विकल्पपरिवर्जितः ।
वरिष्ठो वरदो वन्द्यो विचित्राङ्गो विरोचनः ॥१६७॥

शुष्कोदरः शुक्लवपुः शान्तरूपी शनैश्चरः ।
शूली शरण्यः शान्तश्च शिवायामप्रियङ्करः ॥१६८॥
शिवभक्तिमतां श्रेष्ठः शूलपाणी शुचिप्रियः ।
श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञः श्रुतिजालप्रबोधकः ॥१६९॥
श्रुतिपारग सम्पूज्यः श्रुतिश्रवणलोलुपः ।
श्रुत्यन्तर्गतमर्मज्ञः श्रुत्येष्टवरदायकः ॥१७०॥

श्रुतिरूपः श्रुतिप्रीतः श्रुतीप्सितफलप्रदः ।
शुचिश्रुतः शान्तमूर्तिः श्रुतिश्रवणकीर्तनः ॥१७१॥
शमीमूलनिवासी च शमीकृतफलप्रदः ।
शमीकृतमहाघोरः शरणागतवत्सलः ॥१७२॥
शमीतरुस्वरूपश्च शिवमन्त्रज्ञमुक्तिदः ।
शिवागमैकनिलयः शिवमन्त्रजपप्रियः ॥१७३॥
शमीपत्रप्रियश्चैव शमीपर्णसमर्चितः ।
शतोपनिषदस्तुत्यः शान्त्यादिगुणभूषितः ॥१७४॥
शान्त्यादिषड्गुणोपेतः शङ्खवाद्यप्रियस्तथा ।
श्यामरक्तसितज्योतिः शुद्धपञ्चाक्षरप्रियः ॥१७५॥

श्रीहालास्यक्षेत्रवासी श्रीमान् शक्तिधरस्तथा ।
षोडशद्वयसम्पूर्णलक्षणः षण्मुखप्रियः ॥१७६॥
षड्गुणैश्वर्यसंयुक्तः षडङ्गावरणोज्वलः ।
षडक्षरस्वरूपश्च षट्चक्रोपरि संस्थितः ॥१७७॥
षोडशी षोडशान्तश्च षट्शक्तिव्यक्तमूर्तिमान् ।
षड्भावरहितश्चैव षडङ्गश्रुतिपारगः ॥१७८॥
षट्कोणमध्यनिलयः षट्शास्त्रस्मृतिपारगः ।
स्वर्णेन्द्रनीलमकुटः सर्वाभीष्टप्रदायकः ॥१७९॥
सर्वात्मा सर्वदोषघ्नः सर्वगर्वप्रभञ्जनः ।
समस्तलोकाभयदः सर्वदोषाङ्गनाशकः ॥१८०॥

समस्तभक्तसुखदः सर्वदोषनिवर्तकः ।
सर्वनाशक्षमः सौम्यः सर्वक्लेशनिवारकः ॥१८१॥
सर्वात्मा सर्वदा तुष्टः सर्वपीडानिवारकः ।
सर्वरूपी सर्वकर्मा सर्वज्ञः सर्वकारकः ॥१८२॥
सुकृती सुलभश्चैव सर्वाभीष्टफलप्रदः ।
सूर्यात्मजः सदातुष्टः सूर्यवंशप्रदीपनः ॥१८३॥
सप्तद्वीपाधिपश्चैव सुरासुरभयङ्करः ।
सर्वसंक्षोभहारी च सर्वलोकहितङ्करः ॥१८४॥

सर्वौदार्यस्वभावश्च सन्तोषात्सकलेष्टदः ।
समस्तऋषिभिःस्तुत्यः समस्तगणपावृतः ॥१८५॥

समस्तगणसंसेव्यः सर्वारिष्टविनाशनः ।
सर्वसौख्यप्रदाता च सर्वव्याकुलनाशनः ॥१८६॥
सर्वसंक्षोभहारी च सर्वारिष्ट फलप्रदः ।
सर्वव्याधिप्रशमनः सर्वमृत्युनिवारकः ॥१८७॥
सर्वानुकूलकारी च सौन्दर्यमृदुभाषितः ।
सौराष्ट्रदेशोद्भवश्च स्वक्षेत्रेष्टवरप्रदः ॥१८८॥
सोमयाजि समाराध्यः सीताभीष्ट वरप्रदः ।
सुखासनोपविष्टश्च सद्यःपीडानिवारकः ॥१८९॥
सौदामनीसन्निभश्च सर्वानुल्लङ्घ्यशासनः ।
सूर्यमण्डलसञ्चारी संहारास्त्रनियोजितः ॥१९०॥

सर्वलोकक्षयकरः सर्वारिष्टविधायकः ।
सर्वव्याकुलकारी च सहस्रजपसुप्रियः ॥१९१॥
सुखासनोपविष्टश्च संहारास्त्रप्रदर्शितः ।
सर्वालङ्कार संयुक्तकृष्णगोदानसुप्रियः ॥१९२॥
सुप्रसन्नः सुरश्रेष्ठः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सर्वज्ञः सर्वदः सुखी ॥१९३॥
सुग्रीवः सुधृतिः सारः सुकुमारः सुलोचनः ।
सुव्यक्तः सच्चिदानन्दः सुवीरः सुजनाश्रयः ॥१९४॥
हरिश्चन्द्रसमाराध्यो हेयोपादेयवर्जितः ।
हरिश्चन्द्रेष्टवरदो हंसमन्त्रादि संस्तुतः ॥१९५॥

हंसवाह समाराध्यो हंसवाहवरप्रदः ।
हृद्यो हृष्टो हरिसखो हंसो हंसगतिर्हविः ॥१९६॥
हिरण्यवर्णो हितकृद्धर्षदो हेमभूषणः ।
हविर्होता हंसगतिर्हंसमन्त्रादिसंस्तुतः ॥१९७॥
हनूमदर्चितपदो हलधृत् पूजितः सदा ।
क्षेमदः क्षेमकृत्क्षेम्यः क्षेत्रज्ञः क्षामवर्जितः ॥१९८॥
क्षुद्रघ्नः क्षान्तिदः क्षेमः क्षितिभूषः क्षमाश्रयः ।
क्षमाधरः क्षयद्वारो नाम्नामष्टसहस्रकम् ॥१९९॥
वाक्येनैकेन वक्ष्यामि वाञ्छितार्थं प्रयच्छति ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन नियमेन जपेत्सुधीः ॥२००॥

॥इति शनैश्चरसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीशनैश्चरसहस्रनामावलि

श्रीशनैश्चरसहस्रनामावळिः ॥

1. ॐ अमिताभाषिणे नमः।
2. ॐ अघहराय नमः।
3. ॐ अशेषदुरितापहाय नमः।
4. ॐ अघोररूपाय नमः।
5. ॐ अतिदीर्घकायाय नमः।
6. ॐ अशेषभयानकाय नमः।
7. ॐ अनन्ताय नमः।
8. ॐ अन्नदात्रे नमः।
9. ॐ अश्वत्थमूलजपप्रियाय नमः।
10. ॐ अतिसम्पत्प्रदाय नमः।
11. ॐ अमोघाय नमः।
12. ॐ अन्यस्तुत्याप्रकोपिताय नमः।
13. ॐ अपराजिताय नमः।
14. ॐ अद्वितीयाय नमः।
15. ॐ अतितेजसे नमः।
16. ॐ अभयप्रदाय नमः।
17. ॐ अष्टमस्थाय नमः।
18. ॐ अञ्जननिभाय नमः।
19. ॐ अखिलात्मने नमः।
20. ॐ अर्कनन्दनाय नमः।
21. ॐ अतिदारुणाय नमः।
22. ॐ अक्षोभ्याय नमः।
23. ॐ अप्सरोभिः प्रपूजिताय नमः।
24. ॐ अभीष्टफलदाय नमः।
25. ॐ अरिष्टमथनाय नमः।
26. ॐ अमरपूजिताय नमः।
27. ॐ अनुग्राह्याय नमः।
28. ॐ अप्रमेयपराक्रमविभीषणाय नमः।
29. ॐ असाध्ययोगाय नमः।
30. ॐ अखिलदोषघ्नाय नमः।
31. ॐ अपराकृताय नमः।
32. ॐ अप्रमेयाय नमः।
33. ॐ अतिसुखदाय नमः।
34. ॐ अमराधिपपूजिताय नमः।
35. ॐ अवलोकात्सर्वनाशाय नमः।
36. ॐ अश्वत्थामद्विरायुधाय नमः।
37. ॐ अपराधसहिष्णवे नमः।
38. ॐ अश्वत्थामसुपूजिताय नमः।
39. ॐ अनन्तपुण्यफलदाय नमः।
40. ॐ अतृप्ताय नमः।
41. ॐ अतिबलाय नमः।
42. ॐ अवलोकात्सर्ववन्द्याय नमः।
43. ॐ अक्षीणकरुणानिधये नमः।
44. ॐ अविद्यामूलनाशाय नमः।
45. ॐ अक्षय्यफलदायकाय नमः।
46. ॐ आनन्दपरिपूर्णाय नमः।
47. ॐ आयुष्कारकाय नमः।
48. ॐ आश्रितेष्टार्थवरदाय नमः।
49. ॐ आधिव्याधिहराय नमः।
50. ॐ आनन्दमयाय नमः।
51. ॐ आनन्दकराय नमः।
52. ॐ आयुधधारकाय नमः।
53. ॐ आत्मचक्राधिकारिणे नमः।
54. ॐ आत्मस्तुत्यपरायणाय नमः।
55. ॐ आयुष्कराय नमः।
56. ॐ आनुपूर्व्याय नमः।
57. ॐ आत्मायत्तजगत्त्रयाय नमः।
58. ॐ आत्मनामजपप्रीताय नमः।
59. ॐ आत्माधिकफलप्रदाय नमः।
60. ॐ आदित्यसंभवाय नमः।
61. ॐ आर्तिभञ्जनाय नमः।
62. ॐ आत्मरक्षकाय नमः।
63. ॐ आपद्बान्धवाय नमः।
64. ॐ आनन्दरूपाय नमः।
65. ॐ आयुःप्रदाय नमः।
66. ॐ आकर्णपूर्णचापाय नमः।
67. ॐ आत्मोद्दिष्टद्विजप्रदाय नमः।
68. ॐ आनुकूल्याय नमः।
69. ॐ आत्मरूपप्रतिमादानसुप्रियाय नमः।
70. ॐ आत्मारामाय नमः।
71. ॐ आदिदेवाय नमः।
72. ॐ आपन्नार्तिविनाशनाय नमः।
73. ॐ इन्दिरार्चितपादाय नमः।
74. ॐ इन्द्रभोगफलप्रदाय नमः।
75. ॐ इन्द्रदेवस्वरूपाय नमः।
76. ॐ इष्टेष्टवरदायकाय नमः।
77. ॐ इष्टापूर्तिप्रदाय नमः।
78. ॐ इन्दुमतीष्टवरदायकाय नमः।
79. ॐ इन्दिरारमणप्रीताय नमः।
80. ॐ इन्द्रवंशनृपार्चिताय नमः।
81. ॐ इहामुत्रेष्टफलदाय नमः।
82. ॐ इन्दिरारमणार्चिताय नमः।
83. ॐ ईद्रियाय नमः।
84. ॐ ईश्वरप्रीताय नमः।
85. ॐ ईषणात्रयवर्जिताय नमः।
86. ॐ उमास्वरूपाय नमः।
87. ॐ उद्बोध्याय नमः।
88. ॐ उशनाय नमः।
89. ॐ उत्सवप्रियाय नमः।
90. ॐ उमादेव्यर्चनप्रीताय नमः।
91. ॐ उच्चस्थोच्चफलप्रदाय नमः।
92. ॐ उरुप्रकाशाय नमः।
93. ॐ उच्चस्थयोगदाय नमः।
94. ॐ उरुपराक्रमाय नमः।
95. ॐ ऊर्ध्वलोकादिसञ्चारिणे नमः।
96. ॐ ऊर्ध्वलोकादिनायकाय नमः।
97. ॐ ऊर्जस्विने नमः।
98. ॐ ऊनपादाय नमः।
99. ॐ ऋकाराक्षरपूजिताय नमः।
100. ॐ ऋषिप्रोक्तपुराणज्ञाय नमः।
101. ॐ ऋषिभिः परिपूजिताय नमः।
102. ॐ ऋग्वेदवन्द्याय नमः।
103. ॐ ऋग्रूपिणे नमः।
104. ॐ ऋजुमार्गप्रवर्तकाय नमः।
105. ॐ लुळितोद्धारकाय नमः।
106. ॐ लूतभवपाश प्रभञ्जनाय नमः।
107. ॐ लूकाररूपकाय नमः।
108. ॐ लब्धधर्ममार्गप्रवर्तकाय नमः।
109. ॐ एकाधिपत्यसाम्राज्यप्रदाय नमः।
110. ॐ एनौघनाशनाय नमः।
111. ॐ एकपादे नमः।
112. ॐ एकस्मै नमः।
113. ॐ एकोनविंशतिमासभुक्तिदाय नमः।

114. ॐ एकोनविंशतिवर्षदशाय नमः।
115. ॐ एणाङ्कपूजिताय नमः।
116. ॐ ऐश्वर्यफलदाय नमः।
117. ॐ ऐन्द्राय नमः।
118. ॐ ऐरावतसुपूजिताय नमः।
119. ॐ ओंकारजपसुप्रीताय नमः।
120. ॐ ओंकारपरिपूजिताय नमः।
121. ॐ ओंकारबीजाय नमः।
122. ॐ औदार्यहस्ताय नमः।
123. ॐ औन्नत्यदायकाय नमः।
124. ॐ औदार्यगुणाय नमः।
125. ॐ औदार्यशीलाय नमः।
126. ॐ औषधकारकाय नमः।
127. ॐ करपङ्कजसन्नद्धधनुषे नमः।
128. ॐ करुणानिधये नमः।
129. ॐ कालाय नमः।
130. ॐ कठिनचित्ताय नमः।
131. ॐ कालमेघसमप्रभाय नमः।
132. ॐ किरीटिने नमः।
133. ॐ कर्मकृते नमः।
134. ॐ कारयित्रे नमः।
135. ॐ कालसहोदराय नमः।
136. ॐ कालाम्बराय नमः।
137. ॐ काकवाहाय नमः।
138. ॐ कर्मठाय नमः।
139. ॐ काश्यपान्वयाय नमः।
140. ॐ कालचक्रप्रभेदिने नमः।
141. ॐ कालरूपिणे नमः।
142. ॐ कारणाय नमः।
143. ॐ कारिमूर्तये नमः।
144. ॐ कालभर्त्रे नमः।
145. ॐ किरीटमकुटोज्ज्वलाय नमः।
146. ॐ कार्यकारणकालज्ञाय नमः।
147. ॐ काञ्चनाभरथान्विताय नमः।
148. ॐ कालदंष्ट्राय नमः।
149. ॐ क्रोधरूपाय नमः।
150. ॐ कराळिने नमः।
151. ॐ कृष्णकेतनाय नमः।
152. ॐ कालात्मने नमः।
153. ॐ कालकर्त्रे नमः।
154. ॐ कृतान्ताय नमः।
155. ॐ कृष्णगोप्रियाय नमः।
156. ॐ कालाग्निरुद्ररूपाय नमः।
157. ॐ काश्यपात्मजसम्भवाय नमः।
158. ॐ कृष्णवर्णहयाय नमः।
159. ॐ कृष्णगोक्षीरसुप्रियाय नमः।
160. ॐ कृष्णगोघृतसुप्रीताय नमः।
161. ॐ कृष्णगोदधिषुप्रियाय नमः।
162. ॐ कृष्णगावैकचित्ताय नमः।
163. ॐ कृष्णगोदानसुप्रियाय नमः।
164. ॐ कृष्णगोदत्तहृदयाय नमः।
165. ॐ कृष्णगोरक्षणप्रियाय नमः।
166. ॐ कृष्णगोग्रासचित्तस्य सर्वपीडानिवारकाय नमः।
167. ॐ कृष्णगोदान शान्तस्य सर्वशान्ति फलप्रदाय नमः।
168. ॐ कृष्णगोस्नान कामस्य गङ्गास्नान फलप्रदाय नमः।
169. ॐ कृष्णगोरक्षणस्याशु सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः।
170. ॐ कृष्णगावप्रियाय नमः।
171. ॐ कपिलापशुषुप्रियाय नमः।
172. ॐ कपिलाक्षीरपानस्य सोमपानफलप्रदाय नमः।
173. ॐ कपिलादानसुप्रीताय नमः।
174. ॐ कपिलाज्यहुतप्रियाय नमः।
175. ॐ कृष्णाय नमः।
176. ॐ कृत्तिकान्तस्थाय नमः।
177. ॐ कृष्णगोवत्ससुप्रियाय नमः।
178. ॐ कृष्णमाल्याम्बरधराय नमः।
179. ॐ कृष्णवर्णतनूरुहाय नमः।
180. ॐ कृष्णकेतवे नमः।
181. ॐ कृशकृष्णदेहाय नमः।
182. ॐ कृष्णाम्बरप्रियाय नमः।
183. ॐ क्रूरचेष्टाय नमः।
184. ॐ क्रूरभावाय नमः।
185. ॐ क्रूरदंष्ट्राय नमः।
186. ॐ कुरूपिणे नमः।
187. ॐ कमलापति संसेव्याय नमः।
188. ॐ कमलोद्भवपूजिताय नमः।
189. ॐ कामितार्थप्रदाय नमः।
190. ॐ कामधेनु पूजनसुप्रियाय नमः।
191. ॐ कामधेनुसमाराध्याय नमः।
192. ॐ कृपायुषविवर्धनाय नमः।
193. ॐ कामधेन्वैकचित्ताय नमः।
194. ॐ कृपराज सुपूजिताय नमः।
195. ॐ कामदोग्ध्रे नमः।
196. ॐ क्रुद्धाय नमः।
197. ॐ कुरुवंशसुपूजिताय नमः।
198. ॐ कृष्णाङ्गमहिषीदोग्ध्रे नमः।
199. ॐ कृष्णेन कृतपूजनाय नमः।
200. ॐ कृष्णाङ्गमहिषीदानप्रियाय नमः।
201. ॐ कोणस्थाय नमः।
202. ॐ कृष्णाङ्गमहिषीदानलोलुपाय नमः।
203. ॐ कामपूजिताय नमः।
204. ॐ क्रूरावलोकनात्सर्वनाशाय नमः।
205. ॐ कृष्णाङ्गदप्रियाय नमः।
206. ॐ खद्योताय नमः।
207. ॐ खण्डनाय नमः।
208. ॐ खड्गधराय नमः।
209. ॐ खेचरपूजिताय नमः।
210. ॐ खरांशुतनयाय नमः।
211. ॐ खगानां पतिवाहनाय नमः।
212. ॐ गोसवासक्तहृदयाय नमः।
213. ॐ गोचरस्थानदोषहृते नमः।
214. ॐ गृहराश्याधिपाय नमः।
215. ॐ गृहराजमहाबलाय नमः।
216. ॐ गृध्रवाहाय नमः।
217. ॐ गृहपतये नमः।
218. ॐ गोचराय नमः।
219. ॐ गानलोलुपाय नमः।
220. ॐ घोराय नमः।
221. ॐ घर्माय नमः।
222. ॐ घनतमसे नमः।
223. ॐ घर्मिणे नमः।
224. ॐ घनकृपान्विताय नमः।
225. ॐ घननीलाम्बरधराय नमः।
226. ॐ ङादिवर्ण सुसंज्ञिताय नमः।
227. ॐ चक्रवर्तिसमाराध्याय नमः।
228. ॐ चन्द्रमत्यसमर्चिताय नमः।

229. ॐ चन्द्रमत्यार्तिहारिणे नमः।
230. ॐ चराचरसुखप्रदाय नमः।
231. ॐ चतुर्भुजाय नमः।
232. ॐ चापहस्ताय नमः।
233. ॐ चराचरहितप्रदाय नमः।
234. ॐ छायापुत्राय नमः।
235. ॐ छत्रधराय नमः।
236. ॐ छायादेवीसुताय नमः।
237. ॐ जयप्रदाय नमः।
238. ॐ जगन्नीलाय नमः।
239. ॐ जपतां सर्वसिद्धिदाय नमः।
240. ॐ जपविध्वस्तविमुखाय नमः।
241. ॐ जम्भारिपरिपूजिताय नमः।
242. ॐ जम्भारिवन्द्याय नमः।
243. ॐ जयदाय नमः।
244. ॐ जगज्जनमनोहराय नमः।
245. ॐ जगत्त्रयप्रकुपिताय नमः।
246. ॐ जगत्त्राणपरायणाय नमः।
247. ॐ जयाय नमः।
248. ॐ जयप्रदाय नमः।
249. ॐ जगदानन्दकारकाय नमः।
250. ॐ ज्योतिषे नमः।
251. ॐ ज्योतिषां श्रेष्ठाय नमः।
252. ॐ ज्योतिःशास्त्र प्रवर्तकाय नमः।
253. ॐ झर्झरीकृतदेहाय नमः।
254. ॐ झल्लरीवाद्यसुप्रियाय नमः।
255. ॐ ज्ञानमूर्तिये नमः।
256. ॐ ज्ञानगम्याय नमः।
257. ॐ ज्ञानिने नमः।
258. ॐ ज्ञानमहानिधये नमः।
259. ॐ ज्ञानप्रबोधकाय नमः।
260. ॐ ज्ञानदृष्ट्यावलोकिताय नमः।
261. ॐ टङ्किताखिललोकाय नमः।
262. ॐ टङ्कितैनस्तमोरवये नमः।
263. ॐ टङ्कारकारकाय नमः।
264. ॐ टङ्कृताय नमः।
265. ॐ टाम्भदप्रियाय नमः।
266. ॐ ठकारमय सर्वस्वाय नमः।
267. ॐ ठकारकृतपूजिताय नमः।
268. ॐ ढक्कावाद्यप्रीतिकराय नमः।
269. ॐ डमड्डमरुकप्रियाय नमः।
270. ॐ डम्बरप्रभवाय नमः।
271. ॐ डम्भाय नमः।
272. ॐ ढक्कानादप्रियङ्कराय नमः।
273. ॐ डाकिनी शाकिनी भूत सर्वोपद्रवकारकाय नमः।
274. ॐ डाकिनी शाकिनी भूत सर्वोपद्रवनाशकाय नमः।
275. ॐ ढकाररूपाय नमः।
276. ॐ ढाम्भीकाय नमः।
277. ॐ णकारजपसुप्रियाय नमः।
278. ॐ णकारमयमन्त्रार्थाय नमः।
279. ॐ णकारैकशिरोमणये नमः।
280. ॐ णकारवचनानन्दाय नमः।
281. ॐ णकारकरुणामयाय नमः।
282. ॐ णकारमय सर्वस्वाय नमः।
283. ॐ णकारैकपरायणाय नमः।
284. ॐ तर्जनीधृतमुद्राय नमः।
285. ॐ तपसां फलदायकाय नमः।
286. ॐ त्रिविक्रमनुताय नमः।
287. ॐ त्रयीमयवपुर्धराय नमः।
288. ॐ तपस्विने नमः।
289. ॐ तपसा दग्धदेहाय नमः।
290. ॐ ताम्राधराय नमः।
291. ॐ त्रिकालवेदितव्याय नमः।
292. ॐ त्रिकालमतितोषिताय नमः।
293. ॐ तुलोच्चयाय नमः।
294. ॐ त्रासकराय नमः।
295. ॐ तिलतैलप्रियाय नमः।
296. ॐ तिलान्न सन्तुष्टमनसे नमः।
297. ॐ तिलदानप्रियाय नमः।
298. ॐ तिलभक्ष्यप्रियाय नमः।
299. ॐ तिलचूर्णप्रियाय नमः।
300. ॐ तिलखण्डप्रियाय नमः।
301. ॐ तिलापूपप्रियाय नमः।
302. ॐ तिलहोमप्रियाय नमः।
303. ॐ तापत्रयनिवारकाय नमः।
304. ॐ तिलतर्पणसन्तुष्टाय नमः।
305. ॐ तिलतैलान्नतोषिताय नमः।
306. ॐ तिलैकदत्तहृदयाय नमः।
307. ॐ तेजस्विने नमः।
308. ॐ तेजसान्निधये नमः।
309. ॐ तेजसादित्यसङ्काशाय नमः।
310. ॐ तेजोमयवपुर्धराय नमः।
311. ॐ तत्वज्ञाय नमः।
312. ॐ तत्वगाय नमः।
313. ॐ तीव्राय नमः।
314. ॐ तपोरूपाय नमः।
315. ॐ तपोमयाय नमः।
316. ॐ तुष्टिदाय नमः।
317. ॐ तुष्टिकृते नमः।
318. ॐ तीक्ष्णाय नमः।
319. ॐ त्रिमूर्तये नमः।
320. ॐ त्रिगुणात्मकाय नमः।
321. ॐ तिलदीपप्रियाय नमः।
322. ॐ तस्यपीडानिवारकाय नमः।
323. ॐ तिलोत्तमामेनकादिनर्तन प्रियाय नमः।
324. ॐ त्रिभागमष्टवर्गाय नमः।
325. ॐ स्थूलरोम्णे नमः।
326. ॐ स्थिराय नमः।
327. ॐ स्थिताय नमः।
328. ॐ स्थायिने नमः।
329. ॐ स्थापकाय नमः।
330. ॐ स्थूलसूक्ष्मप्रदर्शकाय नमः।
331. ॐ दशरथार्चितपादाय नमः।
332. ॐ दशरथस्तोत्रतोषिताय नमः।
333. ॐ दशरथप्रार्थनाक्लृप्तदुर्भिक्षविनिवारकाय नमः।
334. ॐ दशरथप्रार्थनाक्लृप्तवरद्वयप्रदायकाय नमः।
335. ॐ दशरथस्वात्मदर्शिने नमः।
336. ॐ दशरथाभीष्टदायकाय नमः।
337. ॐ दोर्भिर्धनुर्धराय नमः।

338. ॐ दीर्घशमश्रुजटाधराय नमः।
339. ॐ दशरथस्तोत्रवरदाय नमः।
340. ॐ दशरथाभीप्सितप्रदाय नमः।
341. ॐ दशरथस्तोत्रसन्तुष्टाय नमः।
342. ॐ दशरथेन सुपूजिताय नमः।
343. ॐ द्वादशाष्टमजन्मस्थाय नमः।
344. ॐ देवपुङ्गवपूजिताय नमः।
345. ॐ देवदानवदर्पघ्नाय नमः।
346. ॐ दिनं प्रतिमुनिस्तुताय नमः।
347. ॐ द्वादशस्थाय नमः।
348. ॐ द्वादशात्मसुताय नमः।
349. ॐ द्वादशनामभृते नमः।
350. ॐ द्वितीयस्थाय नमः।
351. ॐ द्वादशार्कसूनवे नमः।
352. ॐ दैवज्ञपूजिताय नमः।
353. ॐ दैवज्ञचित्तवासिने नमः।
354. ॐ दमयन्त्यासुपूजिताय नमः।
355. ॐ द्वादशाब्दंतु दुर्भिक्षकारिणे नमः।
356. ॐ दुःस्वप्ननाशनाय नमः।
357. ॐ दुराराध्याय नमः।
358. ॐ दुराधर्षाय नमः।
359. ॐ दमयन्तीवरप्रदाय नमः।
360. ॐ दुष्टदूराय नमः।
361. ॐ दुराचारशमनाय नमः।
362. ॐ दोषवर्जिताय नमः।
363. ॐ दुःसहाय नमः।
364. ॐ दोषहन्त्रे नमः।
365. ॐ दुर्लभाय नमः।
366. ॐ दुर्गमाय नमः।
367. ॐ दुःखप्रदाय नमः।
368. ॐ दुःखहन्त्रे नमः।
369. ॐ दीप्तरञ्जितदिङ्मुखाय नमः।
370. ॐ दीप्यमान मुखाम्भोजाय नमः।
371. ॐ दमयन्त्याःशिवप्रदाय नमः।
372. ॐ दुर्निरीक्ष्याय नमः।
373. ॐ दृष्टमात्रदैत्यमण्डल नाशकाय नमः।
374. ॐ द्विजदानैकनिरताय नमः।
375. ॐ द्विजाराधनतत्पराय नमः।
376. ॐ द्विजसर्वार्तिहारिणे नमः।
377. ॐ द्विजराज समर्चिताय नमः।
378. ॐ द्विजदानैकचित्ताय नमः।
379. ॐ द्विजराज प्रियङ्कराय नमः।
380. ॐ द्विजाय नमः।
381. ॐ द्विजप्रियाय नमः।
382. ॐ द्विजराजेष्टदायकाय नमः।
383. ॐ द्विजरूपाय नमः।
384. ॐ द्विजश्रेष्ठाय नमः।
385. ॐ दोषदाय नमः।
386. ॐ दुःसहाय नमः।
387. ॐ देवादिदेवाय नमः।
388. ॐ देवेशाय नमः।
389. ॐ देवराज सुपूजिताय नमः।
390. ॐ देवराजेष्टवरदाय नमः।
391. ॐ देवराज प्रियङ्कराय नमः।
392. ॐ देवादिवन्दिताय नमः।
393. ॐ दिव्यतनवे नमः।
394. ॐ देवशिखामणये नमः।
395. ॐ देवगानप्रियाय नमः।
396. ॐ देवदेशिकपुङ्गवाय नमः।
397. ॐ द्विजात्मजासमाराध्याय नमः।
398. ॐ ध्येयाय नमः।
399. ॐ धर्मिणे नमः।
400. ॐ धनुर्धराय नमः।४००
401. ॐ धनुष्मते नमः।
402. ॐ धनदात्रे नमः।
403. ॐ धर्माधर्मविवर्जिताय नमः।
404. ॐ धर्मरूपाय नमः।
405. ॐ धनुर्दिव्याय नमः।
406. ॐ धर्मशास्त्रात्मचेतनाय नमः।
407. ॐ धर्मराज प्रियकराय नमः।
408. ॐ धर्मराज सुपूजिताय नमः।
409. ॐ धर्मराजेष्टवरदाय नमः।
410. ॐ धर्माभीष्टफलप्रदाय नमः।
411. ॐ नित्यतृप्तस्वभावाय नमः।
412. ॐ नित्यकर्मरताय नमः।
413. ॐ निजपीडार्तिहारिणे नमः।
414. ॐ निजभक्तेष्टदायकाय नमः।
415. ॐ निर्मासदेहाय नमः।
416. ॐ नीलाय नमः।
417. ॐ निजस्तोत्रबहुप्रियाय नमः।
418. ॐ नळस्तोत्रप्रियाय नमः।
419. ॐ नळराजसुपूजिताय नमः।
420. ॐ नक्षत्रमण्डलगताय नमः।
421. ॐ नमतांप्रियकारकाय नमः।
422. ॐ नित्यार्चितपदाम्भोजाय नमः।
423. ॐ निजाज्ञापरिपालकाय नमः।
424. ॐ नवग्रहवराय नमः।
425. ॐ नीलवपुषे नमः।
426. ॐ नळकरार्चिताय नमः।
427. ॐ नळप्रियानन्दिताय नमः।
428. ॐ नळक्षेत्रनिवासकाय नमः।
429. ॐ नळपाकप्रियाय नमः।
430. ॐ नळपद्भञ्जनक्षमाय नमः।
431. ॐ नळसर्वार्तिहारिणे नमः।
432. ॐ नळेनात्मार्थपूजिताय नमः।
433. ॐ निपाटवीनिवासाय नमः।
434. ॐ नळाभीष्टवरप्रदाय नमः।
435. ॐ नळतीर्थसकृत् स्नान सर्वपीडानिवारकाय नमः।
436. ॐ नळेशदर्शनस्याशु साम्राज्यपदवीप्रदाय नमः।
437. ॐ नक्षत्रराश्यधिपाय नमः।
438. ॐ नीलध्वजविराजिताय नमः।
439. ॐ नित्ययोगरताय नमः।
440. ॐ नवरत्नविभूषिताय नमः।
441. ॐ नवधाभज्यदेहाय नमः।
442. ॐ नवीकृतजगत्त्रयाय नमः।
443. ॐ नवग्रहाधिपाय नमः।
444. ॐ नवाक्षरजपप्रियाय नमः।
445. ॐ नवात्मने नमः।
446. ॐ नवचक्रात्मने नमः।
447. ॐ नवतत्त्वाधिपाय नमः।
448. ॐ नवोदन प्रियाय नमः।

449. ॐ नवधान्यप्रियाय नमः।
450. ॐ निष्कण्टकाय नमः।
451. ॐ निस्पृहाय नमः।
452. ॐ निरपेक्षाय नमः।
453. ॐ निरामयाय नमः।
454. ॐ नागराजार्चितपदाय नमः।
455. ॐ नागराजप्रियङ्कराय नमः।
456. ॐ नागराजेष्टवरदाय नमः।
457. ॐ नागाभरणभूषिताय नमः।
458. ॐ नागेन्द्रगान निरताय नमः।
459. ॐ नानाभरणभूषिताय नमः।
460. ॐ नवमित्रस्वरूपाय नमः।
461. ॐ नानाश्चर्यविधायकाय नमः।
462. ॐ नानाद्वीपाधिकर्त्रे नमः।
463. ॐ नानालिपिसमावृताय नमः।
464. ॐ नानारूपजगत्स्रष्ट्रे नमः।
465. ॐ नानारूपजनाश्रयाय नमः।
466. ॐ नानालोकाधिपाय नमः।
467. ॐ नानाभाषाप्रियाय नमः।
468. ॐ नानारूपाधिकारिणे नमः।
469. ॐ नवरत्नप्रियाय नमः।
470. ॐ नानाविचित्रवेषाढ्याय नमः।
471. ॐ नानाचित्रविधायकाय नमः।
472. ॐ नीलजीमूतसङ्काशाय नमः।
473. ॐ नीलमेघसमप्रभाय नमः।
474. ॐ नीलाञ्जनचयप्रख्याय नमः।
475. ॐ नीलवस्त्रधरप्रियाय नमः।
476. ॐ नीचभाषाप्रचारज्ञाय नमः।
477. ॐ नीचे स्वल्पफलप्रदाय नमः।
478. ॐ नानागम विधानज्ञाय नमः।
479. ॐ नानानृपसमावृताय नमः।
480. ॐ नानावर्णाकृतये नमः।
481. ॐ नानावर्णस्वरार्तवाय नमः।
482. ॐ नागलोकान्तवासिने नमः।
483. ॐ नक्षत्रत्रयसंयुताय नमः।
484. ॐ नभादिलोकसम्भूताय नमः।
485. ॐ नामस्तोत्रबहुप्रियाय नमः।
486. ॐ नामपारायणप्रीताय नमः।
487. ॐ नामार्चनवरप्रदाय नमः।
488. ॐ नामस्तोत्रैकचित्ताय नमः।
489. ॐ नानारोगार्तिभञ्जनाय नमः।
490. ॐ नवग्रहसमाराध्याय नमः।
491. ॐ नवग्रहभयापहाय नमः।
492. ॐ नवग्रहसुसम्पूज्याय नमः।
493. ॐ नानावेदसुरक्षकाय नमः।
494. ॐ नवग्रहाधिराजाय नमः।
495. ॐ नवग्रहजपप्रियाय नमः।
496. ॐ नवग्रहमयज्योतिषे नमः।
497. ॐ नवग्रहवरप्रदाय नमः।
498. ॐ नवग्रहाणामधिपाय नमः।
499. ॐ नवग्रह सुपीडिताय नमः।
500. ॐ नवग्रहाधीश्वराय नमः।
501. ॐ नवमाणिक्यशोभिताय नमः।
502. ॐ परमात्मने नमः।
503. ॐ परब्रह्मणे नमः।
504. ॐ परमैश्वर्यकारणाय नमः।
505. ॐ प्रपन्नभयहारिणे नमः।
506. ॐ प्रमत्तासुरशिक्षकाय नमः।
507. ॐ प्रासहस्ताय नमः।
508. ॐ पङ्गुपादाय नमः।
509. ॐ प्रकाशात्मने नमः।
510. ॐ प्रतापवते नमः।
511. ॐ पावनाय नमः।
512. ॐ परिशुद्धात्मने नमः।
513. ॐ पुत्रपौत्रप्रवर्धनाय नमः।
514. ॐ प्रसन्नात्सर्वसुखदाय नमः।
515. ॐ प्रसन्नेक्षणाय नमः।
516. ॐ प्रजापत्याय नमः।
517. ॐ प्रियकराय नमः।
518. ॐ प्रणतेप्सितराज्यदाय नमः।
519. ॐ प्रजानां जीवहेतवे नमः।
520. ॐ प्राणिनां परिपालकाय नमः।
521. ॐ प्राणरूपिणे नमः।
522. ॐ प्राणधारिणे नमः।
523. ॐ प्रजानां हितकारकाय नमः।
524. ॐ प्राज्ञाय नमः।
525. ॐ प्रशान्ताय नमः।
526. ॐ प्रज्ञावते नमः।
527. ॐ प्रजारक्षणदीक्षिताय नमः।
528. ॐ प्रावृषेण्याय नमः।
529. ॐ प्राणकारिणे नमः।
530. ॐ प्रसन्नोत्सववन्दिताय नमः।
531. ॐ प्रज्ञानिवासहेतवे नमः।
532. ॐ पुरुषार्थैकसाधनाय नमः।
533. ॐ प्रजाकराय नमः।
534. ॐ प्रातिकूल्याय नमः।
535. ॐ पिङ्गळाक्षाय नमः।
536. ॐ प्रसन्नधिये नमः।
537. ॐ प्रपञ्चात्मने नमः।
538. ॐ प्रसवित्रे नमः।
539. ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय नमः।
540. ॐ पुराणपुरुषाय नमः।
541. ॐ पुरुहूताय नमः।
542. ॐ प्रपञ्चधृते नमः।
543. ॐ प्रतिष्ठिताय नमः।
544. ॐ प्रीतिकराय नमः।
545. ॐ प्रियकारिणे नमः।
546. ॐ प्रयोजनाय नमः।
547. ॐ प्रीतिमते नमः।
548. ॐ प्रवरस्तुत्याय नमः।
549. ॐ पुरूरवसमर्चिताय नमः।
550. ॐ प्रपञ्चकारिणे नमः।
551. ॐ पुण्याय नमः।
552. ॐ पुरुहूत समर्चिताय नमः।
553. ॐ पाण्डवादि सुसंसेव्याय नमः।
554. ॐ प्रणवाय नमः।
555. ॐ पुरुषार्थदाय नमः।
556. ॐ पयोदसमवर्णाय नमः।
557. ॐ पाण्डुपुत्रार्तिभञ्जनाय नमः।
558. ॐ पाण्डुपुत्रेष्टदात्रे नमः।
559. ॐ पाण्डवानां हितङ्कराय नमः।
560. ॐ पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः।
561. ॐ पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वारिष्ट

निवारकाय नमः।
562. ॐ पाण्डुपुत्राद्यर्चिताय नमः।
563. ॐ पूर्वजाय नमः।
564. ॐ प्रपञ्चभृते नमः।
565. ॐ परचक्रप्रभेदिने नमः।
566. ॐ पाण्डवेषु वरप्रदाय नमः।
567. ॐ परब्रह्मस्वरूपाय नमः।
568. ॐ पराज्ञापरिवर्जिताय नमः।
569. ॐ परात्पराय नमः।
570. ॐ पाशहन्त्रे नमः।
571. ॐ परमाणवे नमः।
572. ॐ प्रपञ्चकृते नमः।
573. ॐ पातङ्गिने नमः।
574. ॐ पुरुषाकाराय नमः।
575. ॐ परशम्भुसमुद्भवाय नमः।
576. ॐ प्रसन्नात्सर्वसुखदाय नमः।
577. ॐ प्रपञ्चोद्भवसम्भवाय नमः।
578. ॐ प्रसन्नाय नमः।
579. ॐ परमोदाराय नमः।
580. ॐ पराहङ्कारभञ्जनाय नमः।
581. ॐ पराय नमः।
582. ॐ परमकारुण्याय नमः।
583. ॐ परब्रह्ममयाय नमः।
584. ॐ प्रपन्नभयहारिणे नमः।
585. ॐ प्रणतार्तिहराय नमः।
586. ॐ प्रसादकृते नमः।
587. ॐ प्रपञ्चाय नमः।
588. ॐ पराशक्ति समुद्भवाय नमः।
589. ॐ प्रदानपावनाय नमः।
590. ॐ प्रशान्तात्मने नमः।
591. ॐ प्रभाकराय नमः।
592. ॐ प्रपञ्चात्मने नमः।
593. ॐ प्रपञ्चोपशमनाय नमः।
594. ॐ पृथिवीपतये नमः।
595. ॐ परशुराम समाराध्याय नमः।
596. ॐ परशुरामवरप्रदाय नमः।
597. ॐ परशुराम चिरञ्जीविप्रदाय नमः।
598. ॐ परमपावनाय नमः।
599. ॐ परमहंसस्वरूपाय नमः।
600. ॐ परमहंससुपूजिताय नमः।
601. ॐ पञ्चनक्षत्राधिपाय नमः।
602. ॐ पञ्चनक्षत्रसेविताय नमः।
603. ॐ प्रपञ्चरक्षित्रे नमः।
604. ॐ प्रपञ्चस्यभयङ्कराय नमः।
605. ॐ फलदानप्रियाय नमः।
606. ॐ फलहस्ताय नमः।
607. ॐ फलप्रदाय नमः।
608. ॐ फलाभिषेकप्रियाय नमः।
609. ॐ फल्गुनस्य वरप्रदाय नमः।
610. ॐ फुटच्छमितपापौघाय नमः।
611. ॐ फल्गुनेन प्रपूजिताय नमः।
612. ॐ फणिराजप्रियाय नमः।
613. ॐ फुल्लाम्बुज विलोचनाय नमः।
614. ॐ बलिप्रियाय नमः।
615. ॐ बलिने नमः।
616. ॐ बभ्रुवे नमः।
617. ॐ ब्रह्मविष्णवीशक्लेशकृते नमः।
618. ॐ ब्रह्मविष्ण्वीशरूपाय नमः।
619. ॐ ब्रह्मशक्रादिदुर्लभाय नमः।
620. ॐ बासदष्ट्यां प्रमेयाङ्गाय नमः।
621. ॐ बिभ्रत्कवचकुण्डलाय नमः।
622. ॐ बहुश्रुताय नमः।
623. ॐ बहुमतये नमः।
624. ॐ ब्रह्मण्याय नमः।
625. ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः।
626. ॐ बलप्रमथनाय नमः।
627. ॐ ब्रह्मणे नमः।
628. ॐ बहुरूपाय नमः।
629. ॐ बहुप्रदाय नमः।
630. ॐ बालार्कद्युतिमते नमः।
631. ॐ बालाय नमः।
632. ॐ बृहद्वक्षसे नमः।
633. ॐ बृहत्तनवे नमः।
634. ॐ ब्रह्माण्डभेदकृते नमः।
635. ॐ भक्तसर्वार्थसाधकाय नमः।
636. ॐ भव्याय नमः।
637. ॐ भोक्त्रे नमः।
638. ॐ भीतिकृते नमः।
639. ॐ भक्तानुग्रहकारकाय नमः।
640. ॐ भीषणाय नमः।
641. ॐ भैक्षकारिणे नमः।
642. ॐ भूसुरादि सुपूजिताय नमः।
643. ॐ भोगभाग्यप्रदाय नमः।
644. ॐ भस्मीकृतजगत्त्रयाय नमः।
645. ॐ भयानकाय नमः।
646. ॐ भानुसूनवे नमः।
647. ॐ भूतिभूषितविग्रहाय नमः।
648. ॐ भास्वद्रताय नमः।
649. ॐ भक्तिमतां सुलभाय नमः।
650. ॐ भ्रुकुटीमुखाय नमः।
651. ॐ भवभूतगणैःस्तुत्याय नमः।
652. ॐ भूतसंघसमावृताय नमः।
653. ॐ भ्राजिष्णवे नमः।
654. ॐ भगवते नमः।
655. ॐ भीमाय नमः।
656. ॐ भक्ताभीष्टवरप्रदाय नमः।
657. ॐ भवभक्तैकचित्ताय नमः।
658. ॐ भक्तिगीतस्तवोन्मुखाय नमः।
659. ॐ भूतसन्तोषकारिणे नमः।
660. ॐ भक्तानां चित्तशोधनाय नमः।
661. ॐ भक्तिगम्याय नमः।
662. ॐ भयहराय नमः।
663. ॐ भावज्ञाय नमः।
664. ॐ भक्तसुप्रियाय नमः।
665. ॐ भूतिदाय नमः।
666. ॐ भूतिकृते नमः।
667. ॐ भोज्याय नमः।
668. ॐ भूतात्मने नमः।
669. ॐ भुवनेश्वराय नमः।
670. ॐ मन्दाय नमः।
671. ॐ मन्दगतये नमः।
672. ॐ मासमेवप्रपूजिताय नमः।
673. ॐ मुचुकुन्दसमाराध्याय नमः।
674. ॐ मुचुकुन्दवरप्रदाय नमः।

675. ॐ मुचुकुन्दार्चितपदाय नमः।
676. ॐ महारूपाय नमः।
677. ॐ महायशसे नमः।
678. ॐ महाभोगिने नमः।
679. ॐ महायोगिने नमः।
680. ॐ महाकायाय नमः।
681. ॐ महाप्रभवे नमः।
682. ॐ महेशाय नमः।
683. ॐ महदैश्वर्याय नमः।
684. ॐ मन्दारकुसुमप्रियाय नमः।
685. ॐ महाक्रतवे नमः।
686. ॐ महामानिने नमः।
687. ॐ महाधीराय नमः।
688. ॐ महाजयाय नमः।
689. ॐ महावीराय नमः।
690. ॐ महाशान्ताय नमः।
691. ॐ मण्डलस्थाय नमः।
692. ॐ महाद्युतये नमः।
693. ॐ महासुताय नमः।
694. ॐ महोदाराय नमः।
695. ॐ महनीयाय नमः।
696. ॐ महोदयाय नमः।
697. ॐ मैथिलीवरदायिने नमः।
698. ॐ मार्ताण्डस्यद्वितीयजाय नमः।
699. ॐ मैथिलीप्रार्थना क्लृप्तदशकण्ठ शिरोपहृते नमः।
700. ॐ मरामरहराराध्याय नमः।
701. ॐ महेन्द्रादि सुरार्चिताय नमः।
702. ॐ महारथाय नमः।
703. ॐ महावेगाय नमः।
704. ॐ मणिरत्नविभूषिताय नमः।
705. ॐ मेषनीचाय नमः।
706. ॐ महाघोराय नमः।
707. ॐ महासौरये नमः।
708. ॐ मनुप्रियाय नमः।
709. ॐ महादीर्घाय नमः।
710. ॐ महाग्रासाय नमः।
711. ॐ महदैश्वर्यदायकाय नमः।
712. ॐ महाशुष्काय नमः।
713. ॐ महारौद्राय नमः।
714. ॐ मुक्तिमार्गप्रदर्शकाय नमः।
715. ॐ मकरकुम्भाधिपाय नमः।
716. ॐ मृकण्डुतनयार्चिताय नमः।
717. ॐ मन्त्राधिष्ठानरूपाय नमः।
718. ॐ मल्लिकाकुसुमप्रियाय नमः।
719. ॐ महामन्त्रस्वरूपाय नमः।
720. ॐ महायन्त्रस्थिताय नमः।
721. ॐ महाप्रकाशदिव्यात्मने नमः।
722. ॐ महादेवप्रियाय नमः।
723. ॐ महाबलि समाराध्याय नमः।
724. ॐ महर्षिगणपूजिताय नमः।
725. ॐ मन्दचारिणे नमः।
726. ॐ महामायिने नमः।
727. ॐ माषदानप्रियाय नमः।
728. ॐ माषोदन प्रीतचित्ताय नमः।
729. ॐ महाशक्तये नमः।
730. ॐ महागुणाय नमः।
731. ॐ यशस्कराय नमः।
732. ॐ योगदात्रे नमः।
733. ॐ यज्ञाङ्गाय नमः।
734. ॐ युगन्धराय नमः।
735. ॐ योगिने नमः।
736. ॐ योग्याय नमः।
737. ॐ याम्याय नमः।
738. ॐ योगरूपिणे नमः।
739. ॐ युगाधिपाय नमः।
740. ॐ यज्ञभृते नमः।
741. ॐ यजमानाय नमः।
742. ॐ योगाय नमः।
743. ॐ योगविदां वराय नमः।
744. ॐ यक्षराक्षसवेताळ कूष्माण्डादिप्रपूजिताय नमः।
745. ॐ यमप्रत्यधिदेवाय नमः।
746. ॐ युगपद्भोगदायकाय नमः।
747. ॐ योगप्रियाय नमः।
748. ॐ योगयुक्ताय नमः।
749. ॐ यज्ञरूपाय नमः।
750. ॐ युगान्तकृते नमः।
751. ॐ रघुवंशसमाराध्याय नमः।
752. ॐ रौद्राय नमः।
753. ॐ रौद्राकृतये नमः।
754. ॐ रघुनन्दन सल्लापाय नमः।
755. ॐ रघुप्रोक्त जपप्रियाय नमः।
756. ॐ रौद्ररूपिणे नमः।
757. ॐ रथारूढाय नमः।
758. ॐ राघवेष्ट वरप्रदाय नमः।
759. ॐ रथिने नमः।
760. ॐ रौद्राधिकारिणे नमः।
761. ॐ राघवेण समर्चिताय नमः।
762. ॐ रोषात्सर्वस्वहारिणे नमः।
763. ॐ राघवेण सुपूजिताय नमः।
764. ॐ राशिद्वयाधिपाय नमः।
765. ॐ रघुभिः परिपूजिताय नमः।
766. ॐ राज्यभूपाकराय नमः।
767. ॐ राजराजेन्द्रवन्दिताय नमः।
768. ॐ रत्नकेयूरभूषाढ्याय नमः।
769. ॐ रमानन्दनवन्दिताय नमः।
770. ॐ रघुपौरुषसन्तुष्टाय नमः।
771. ॐ रघुस्तोत्रबहुप्रियाय नमः।
772. ॐ रघुवंशनृपैःपूज्याय नमः।
773. ॐ रणन्मञ्जीरनूपुराय नमः।
774. ॐ रविनन्दनाय नमः।
775. ॐ राजेन्द्राय नमः।
776. ॐ रघुवंशप्रियाय नमः।
777. ॐ लोहजप्रतिमादानप्रियाय नमः।
778. ॐ लावण्यविग्रहाय नमः।
779. ॐ लोकचूडामणये नमः।
780. ॐ लक्ष्मीवाणीस्तुतिप्रियाय नमः।
781. ॐ लोकरक्षाय नमः।
782. ॐ लोकशिक्षाय नमः।
783. ॐ लोकलोचनरञ्जिताय नमः।
784. ॐ लोकाध्यक्षाय नमः।
785. ॐ लोकवन्द्याय नमः।
786. ॐ लक्ष्मणाग्रजपूजिताय नमः।

787. ॐ वेदवेद्याय नमः।
788. ॐ वज्रदेहाय नमः।
789. ॐ वज्राङ्कुशधराय नमः।
790. ॐ विश्ववन्द्याय नमः।
791. ॐ विरूपाक्षाय नमः।
792. ॐ विमलाङ्गविराजिताय नमः।
793. ॐ विश्वस्थाय नमः।
794. ॐ वायसारूढाय नमः।
795. ॐ विशेषसुखकारकाय नमः।
796. ॐ विश्वरूपिणे नमः।
797. ॐ विश्वगोप्त्रे नमः।
798. ॐ विभावसु सुताय नमः।
799. ॐ विप्रप्रियाय नमः।
800. ॐ विप्ररूपाय नमः।
801. ॐ विप्राराधन तत्पराय नमः।
802. ॐ विशालनेत्राय नमः।
803. ॐ विशिखाय नमः।
804. ॐ विप्रदानबहुप्रियाय नमः।
805. ॐ विश्वसृष्टि समुद्भूताय नमः।
806. ॐ वैश्वानरसमद्युतये नमः।
807. ॐ विष्णवे नमः।
808. ॐ विरिञ्चये नमः।
809. ॐ विश्वेशाय नमः।
810. ॐ विश्वकर्त्रे नमः।
811. ॐ विशाम्पतये नमः।
812. ॐ विराडाधारचक्रस्थाय नमः।
813. ॐ विश्वभुजे नमः।
814. ॐ विश्वभावनाय नमः।
815. ॐ विश्वव्यापारहेतवे नमः।
816. ॐ वक्रक्रूरविवर्जिताय नमः।
817. ॐ विश्वोद्भवाय नमः।
818. ॐ विश्वकर्मणे नमः।
819. ॐ विश्वसृष्टि विनायकाय नमः।
820. ॐ विश्वमूलनिवासिने नमः।
821. ॐ विश्वचित्रविधायकाय नमः।
822. ॐ विश्वाधारविलासिने नमः।
823. ॐ व्यासेन कृतपूजिताय नमः।
824. ॐ विभीषणेष्टवरदाय नमः।
825. ॐ वाञ्छितार्थप्रदायकाय नमः।
826. ॐ विभीषणसमाराध्याय नमः।
827. ॐ विशेषसुखदायकाय नमः।
828. ॐ विषमव्ययाष्टजन्म स्थोऽप्येकादशफलप्रदाय नमः।
829. ॐ वासवात्मजसुप्रीताय नमः।
830. ॐ वसुदाय नमः।
831. ॐ वासवार्चिताय नमः।
832. ॐ विश्वत्राणैकनिरताय नमः।
833. ॐ वाङ्मनोतीतविग्रहाय नमः।
834. ॐ विराण्मन्दिरमूलस्थाय नमः।
835. ॐ वलीमुखसुखप्रदाय नमः।
836. ॐ विपाशाय नमः।
837. ॐ विगतातङ्काय नमः।
838. ॐ विकल्पपरिवर्जिताय नमः।
839. ॐ वरिष्ठाय नमः।
840. ॐ वरदाय नमः।
841. ॐ वन्द्याय नमः।
842. ॐ विचित्राङ्गाय नमः।
843. ॐ विरोचनाय नमः।
844. ॐ शुष्कोदराय नमः।
845. ॐ शुक्लवपुषे नमः।
846. ॐ शान्तरूपिणे नमः।
847. ॐ शनैश्चराय नमः।
848. ॐ शूलिने नमः।
849. ॐ शरण्याय नमः।
850. ॐ शान्ताय नमः।
851. ॐ शिवायामप्रियङ्कराय नमः।
852. ॐ शिवभक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः।
853. ॐ शूलपाणये नमः।
854. ॐ शुचिप्रियाय नमः।
855. ॐ श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञाय नमः।
856. ॐ श्रुतिजालप्रबोधकाय नमः।
857. ॐ श्रुतिपारगसम्पूज्याय नमः।
858. ॐ श्रुतिश्रवणलोलुपाय नमः।
859. ॐ श्रुत्यन्तर्गतमर्मज्ञाय नमः।
860. ॐ श्रुत्येष्टवरदायकाय नमः।
861. ॐ श्रुतिरूपाय नमः।
862. ॐ श्रुतिप्रीताय नमः।
863. ॐ श्रुतीप्सितफलप्रदाय नमः।
864. ॐ शुचिश्रुताय नमः।
865. ॐ शान्तमूर्तये नमः।
866. ॐ श्रुतिश्रवणकीर्तनाय नमः।
867. ॐ शमीमूलनिवासिने नमः।
868. ॐ शमीकृतफलप्रदाय नमः।
869. ॐ शमीकृतमहाघोराय नमः।
870. ॐ शरणागतवत्सलाय नमः।
871. ॐ शमीतरुस्वरूपाय नमः।
872. ॐ शिवमन्त्रज्ञमुक्तिदाय नमः।
873. ॐ शिवागमैकनिलयाय नमः।
874. ॐ शिवमन्त्रजपप्रियाय नमः।
875. ॐ शमीपत्रप्रियाय नमः।
876. ॐ शमीपर्णसमर्चिताय नमः।
877. ॐ शतोपनिषदस्तुत्याय नमः।
878. ॐ शान्त्यादिगुणभूषिताय नमः।
879. ॐ शान्त्यादिषड्गुणोपेताय नमः।
880. ॐ शङ्खवाद्यप्रियाय नमः।
881. ॐ श्यामरक्तसितज्योतिषे नमः।
882. ॐ शुद्धपञ्चाक्षरप्रियाय नमः।
883. ॐ श्रीहालास्यक्षेत्रवासिने नमः।
884. ॐ श्रीमते नमः।
885. ॐ शक्तिधराय नमः।
886. ॐ षोडशद्वयसम्पूर्णलक्षणाय नमः।
887. ॐ षण्मुखप्रियाय नमः।
888. ॐ षड्गुणैश्वर्यसंयुक्ताय नमः।
889. ॐ षडङ्गावरणोज्ज्वलाय नमः।
890. ॐ षडक्षरस्वरूपाय नमः।
891. ॐ षट्चक्रोपरि संस्थिताय नमः।
892. ॐ षोडशिने नमः।
893. ॐ षोडशान्ताय नमः।
894. ॐ षट्शक्तिव्यक्तमूर्तिमते नमः।
895. ॐ षड्भावरहिताय नमः।
896. ॐ षडङ्गश्रुतिपारगाय नमः।
897. ॐ षट्कोणमध्यनिलयाय नमः।
898. ॐ षट्शास्त्रस्मृतिपारगाय नमः।
899. ॐ स्वर्णेन्द्रनीलमकुटाय नमः।

900. ॐ सर्वाभीष्टप्रदायकाय नमः।
901. ॐ सर्वात्मने नमः।
902. ॐ सर्वदोषघ्नाय नमः।
903. ॐ सर्वगर्वप्रभञ्जनाय नमः।
904. ॐ समस्तलोकाभयदाय नमः।
905. ॐ सर्वदोषाङ्गनाशकाय नमः।
906. ॐ समस्तभक्तसुखदाय नमः।
907. ॐ सर्वदोषनिवर्तकाय नमः।
908. ॐ सर्वनाशक्षमाय नमः।
909. ॐ सौम्याय नमः।
910. ॐ सर्वक्लेशनिवारकाय नमः।
911. ॐ सर्वात्मने नमः।
912. ॐ सर्वदातुष्टाय नमः।
913. ॐ सर्वपीडानिवारकाय नमः।
914. ॐ सर्वरूपिणे नमः।
915. ॐ सर्वकर्मणे नमः।
916. ॐ सर्वज्ञाय नमः।
917. ॐ सर्वकारकाय नमः।
918. ॐ सुकृते नमः।
919. ॐ सुलभाय नमः।
920. ॐ सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः।
921. ॐ सूर्यात्मजाय नमः।
922. ॐ सदातुष्टाय नमः।
923. ॐ सूर्यवंशप्रदीपनाय नमः।
924. ॐ सप्तद्वीपाधिपाय नमः।
925. ॐ सुरासुरभयङ्कराय नमः।
926. ॐ सर्वसंक्षोभहारिणे नमः।
927. ॐ सर्वलोकहितङ्कराय नमः।
928. ॐ सर्वौदार्यस्वभावाय नमः।
929. ॐ सन्तोषात्सकलेष्टदाय नमः।
930. ॐ समस्तऋषिभिःस्तुत्याय नमः।
931. ॐ समस्तगणपावृताय नमः।
932. ॐ समस्तगणसंसेव्याय नमः।
933. ॐ सर्वारिष्टविनाशनाय नमः।
934. ॐ सर्वसौख्यप्रदात्रे नमः।
935. ॐ सर्वव्याकुलनाशनाय नमः।
936. ॐ सर्वसंक्षोभहारिणे नमः।
937. ॐ सर्वारिष्टफलप्रदाय नमः।
938. ॐ सर्वव्याधिप्रशमनाय नमः।
939. ॐ सर्वमृत्युनिवारकाय नमः।
940. ॐ सर्वानुकूलकारिणे नमः।
941. ॐ सौन्दर्यमृदुभाषिताय नमः।
942. ॐ सौराष्ट्रदेशोद्भवाय नमः।
943. ॐ स्वक्षेत्रेष्टवरप्रदाय नमः।
944. ॐ सोमयाजि समाराध्याय नमः।
945. ॐ सीताभीष्टवरप्रदाय नमः।
946. ॐ सुखासनोपविष्टाय नमः।
947. ॐ सद्यःपीडानिवारकाय नमः।
948. ॐ सौदामनीसन्निभाय नमः।
949. ॐ सर्वानुल्लङ्घ्यशासनाय नमः।
950. ॐ सूर्यमण्डलसञ्चारिणे नमः।
951. ॐ संहारास्त्रनियोजिताय नमः।
952. ॐ सर्वलोकक्षयकराय नमः।
953. ॐ सर्वारिष्टविधायकाय नमः।
954. ॐ सर्वव्याकुलकारिणे नमः।
955. ॐ सहस्रजपसुप्रियाय नमः।
956. ॐ सुखासनोपविष्टाय नमः।
957. ॐ संहारास्त्रप्रदर्शिताय नमः।
958. ॐ सर्वालङ्कारसंयुक्तकृष्ण गोदानसुप्रियाय नमः।
959. ॐ सुप्रसन्नाय नमः।
960. ॐ सुरश्रेष्ठाय नमः।
961. ॐ सुघोषाय नमः।
962. ॐ सुखदाय नमः।
963. ॐ सुहृदे नमः।
964. ॐ सिद्धार्थाय नमः।
965. ॐ सिद्धसङ्कल्पाय नमः।
966. ॐ सर्वज्ञाय नमः।
967. ॐ सर्वदाय नमः।
968. ॐ सुखिने नमः।
969. ॐ सुग्रीवाय नमः।
970. ॐ सुधृतये नमः।
971. ॐ साराय नमः।
972. ॐ सुकुमाराय नमः।
973. ॐ सुलोचनाय नमः।
974. ॐ सुव्यक्ताय नमः।
975. ॐ सच्चिदानन्दाय नमः।
976. ॐ सुवीराय नमः।
977. ॐ सुजनाश्रयाय नमः।
978. ॐ हरिश्चन्द्रसमाराध्याय नमः।
979. ॐ हेयोपादेयवर्जिताय नमः।
980. ॐ हरिश्चन्द्रेष्टवरदाय नमः।
981. ॐ हंसमन्त्रादि संस्तुताय नमः।
982. ॐ हंसवाह समाराध्याय नमः।
983. ॐ हंसवाहवरप्रदाय नमः।
984. ॐ हृद्याय नमः।
985. ॐ हृष्टाय नमः।
986. ॐ हरिसखाय नमः।
987. ॐ हंसाय नमः।
988. ॐ हंसगतये नमः।
989. ॐ हविषे नमः।
990. ॐ हिरण्यवर्णाय नमः।
991. ॐ हितकृते नमः।
992. ॐ हर्षदाय नमः।
993. ॐ हेमभूषणाय नमः।
994. ॐ हविर्होत्रे नमः।
995. ॐ हंसगतये नमः।
996. ॐ हंसमन्त्रादिसंस्तुताय नमः।
997. ॐ हनूमदर्चितपदाय नमः।
998. ॐ हलधृत्पूजिताय नमः।
999. ॐ क्षेमदाय नमः।
1000. ॐ क्षेमकृते नमः।
1001. ॐ क्षेम्याय नमः।
1002. ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः।
1003. ॐ क्षामवर्जिताय नमः।
1004. ॐ क्षुद्रघ्नाय नमः।
1005. ॐ क्षान्तिदाय नमः।
1006. ॐ क्षेमाय नमः।
1007. ॐ क्षितिभूषाय नमः।
1008. ॐ क्षमाश्रयाय नमः।
1009. ॐ क्षमाधराय नमः।
1010. ॐ क्षयद्वाराय नमः।

इति श्री शनैश्चरसहस्रनामावळिः सम्पूर्णम् ॥

जब हनुमान जी ने मिटाई शनिदेव की पीड़ा!

संकलन गुरुत्व कार्यालय

शनि देव पर तेल चढाया जाता हैं, इस संबंध में आनंद रामायण में एक कथा का उल्लेख मिलता हैं। जब श्री राम की सेना ने सागर सेतु बांध लिया, तब राक्षस इसे हानि न पहुंचा सकें, उसके लिए पवन सुत हनुमान को उसकी देखभाल की जिम्मेदारी सौपी गई। जब हनुमान जी शाम के समय अपने इष्टदेव राम के ध्यान में मग्न थे, तभी सूर्य पुत्र शनि ने अपना काला कुरूप चेहरा बनाकर क्रोधपूर्ण कहा- हे वानर मैं देवताओ में शक्तिशाली शनि हूँ। सुना हैं, तुम बहुत बलशाली हो। आँखें खोलो और मेरे साथ युद्ध करो, मैं तुमसे युद्ध करना चाहता हूँ। इस पर हनुमान ने विनम्रतापूर्वक कहा- इस समय मैं अपने प्रभु को याद कर रहा हूं। आप मेरी पूजा में विध्न मत डालिए। आप मेरे आदरणीय है। कृपा करके आप यहा से चले जाइए।

जब शनि देव लड़ने पर उतर आए, तो हनुमान जी ने अपनी पूंछ में लपेटना शुरू कर दिया। फिर उन्हे कसना प्रारंभ कर दिया जोर लगाने पर भी शनि उस बंधन से मुक्त न होकर पीड़ा से व्याकुल होने लगे। हनुमान ने फिर सेतु की परिक्रमा कर शनि के घमंड को तोड़ने के लिए पत्थरो पर पूंछ को झटका दे-दे कर पटकना शुरू कर दिया। इससे शनि का शरीर लहुलुहान हो गया, जिससे उनकी पीड़ा बढ़ती गई। तब शनि देव ने हनुमान जी से प्रार्थना की कि मुझे बधंन मुक्त कर दीजिए। मैं अपने अपराध की सजा पा चुका हूँ, फिर मुझसे ऐसी गलती नही होगी।

इस पर हनुमान जी बोले-मैं तुम्हे तभी छोड़ूंगा, जब तुम मुझे वचन दोगे कि श्री राम के भक्त को कभी परेशान नही करोगे। यदि तुमने ऐसा किया, तो मैं तुम्हें कठोर दंड दूंगा। शनि ने गिड़गिड़ाकर कहा -मैं वचन देता हूं कि कभी भूलकर भी आपके और श्री राम के भक्त की राशि पर नही आऊँगा। आप मुझे छोड़ दें। तभी हनुमान जी ने शनिदेव को छोड़ दिया। फिर हनुमान जी से शनिदेव ने अपने घावो की पीड़ा मिटाने के लिए तेल मांगा। हनुमान जी ने जो तेल दिया, उसे घाव पर लगाते ही शनि देव की पीड़ा मिट गई। उसी दिन से शनिदेव को तेल चढ़ाया जाता हैं, जिससे उनकी पीडा शांत हो जाती हैं और वे प्रसन्न हो जाते हैं।

श्री शनि चालीसा

दोह

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुख दूर करि,। कीजै नाथ निहाल॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज॥

जयति जयति शनिदेव दयाला। करत यदा भक्तन प्रतिपाला॥
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै। माथे रतन मुकुट छवि छाजै॥

परम विशाल मनोहर भाला। टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला।
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके। हिये माल मुक्तत मणि दमके॥
कर में गदा त्रिशुल कुठारा। पल विच करैं आरिहिं संहारा॥
पिंगल, कृष्णों, छाया, नन्दन। यम कोणस्थ, रौद्र, दुःखभंजन॥
सौरी, मन्द, शनि दशनामा। भानु पुत्र पूजहिं सब कामा।
जा पर प्रभु प्रसन्न है जाहीं। रकंहुं राव करै क्षण माहीं॥
पर्वतहू तृण होई निहारत। तृणहू को पर्वत करि डारत॥
राज मिलत बन रामहिं दीन्हो। कैकेइहुं की मति हरि लीन्हों॥
बनहूं में मृग कपट दिखाई। मातु जानकी गई चतुराई॥
लखनहिं शक्ति विकल करि डारा। मचिंगा दल में हाहाकारा॥
रावण की गति मति बौराई। रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई॥
दियो कीट करि कंचन लंका। बजि बजरंग बीर की डांका॥
नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा। चित्र मयूर निगलि गै हारा॥
हार नौलाखा लाग्यो चोरी। हाथ पैर डरवायो तोरी॥
भारी दशा निकृष्ट दिखायो। तेलिहिं घर कोल्हू चनवायो॥
विनय राग दीपक महं कीन्हों। तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हों॥
हरिश्चन्द्‌ नृप नारि बिकानी। आपहु भरे डोम घर पानी॥
तैसे नल पर दशा सिरानी। भूजी मीन कूद गई पानी॥
श्री शंकरहि गह्यो जब जाई। पार्वती को सती कराई॥
तनिक विलोकत ही करि रीसा। नभ ठडि गयो गौरिसुत सीसा॥
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी। बची द्रौपदी होति उघारी॥
कौरव के भी गति मारयो। युद्ध महाभारत करि डारयो॥
रवि कहं मुख महं धरि तत्काला। लेकर कूदि परयो पाताला॥
शेष देव-लखि विनती लाई। रवि को मुख ते दियो छुड़ई॥
वाहन प्रभु के सात सुजाना। जग दिग्ज गर्दभ मृग स्वाना॥
जम्बुक सिंह आदि नखधारी। सो फल जज्योतिष कहत पुकारी॥
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवै। हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं॥
गर्दभ हानि करै बहु नष्ट कर डारै। मृग दे कष्ट प्रण संहारै॥
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी। चोरी आदि होय डर भारी॥
तैसहि चारि चरण यह नामा। स्वर्ण लौह चांजी अरु तामा॥
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं। धन जन सम्पत्ति नष्ट करावै॥
समता ताम्र रजत शुभकारी। स्र्वण सर्व सुख मंगल कारी॥
जो यह शनि चरित्र नित गावै। कबहु न दशा निकृष्ट समावै॥
अदभुत नाथ दिखावैं लीला। करै शत्रु के नशि बलि ढीला॥
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई। विधिवत शनि ग्रह शांति कराई॥
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत। दीप दान दे बहु सुख पावत॥
कहत रामसुन्दर प्रभु दासा। शनि सुमिरत सुख होत प्रकाश॥

दोहा

पाठ शनिचर देव को की विमल तैयार।
करत पाठ चालिस दिन हो भवसागर पार॥

शनि सम्बन्धी व्यापार और नौकरी

काले रंग की वस्तुयें, लोहा से बनी वस्तुयें, ऊन, तेल, गैस, कोयला, कार्बन से बनी वस्तुयें, चमडा, मशीनों के पार्ट्स, पेट्रोल, पत्थर, तिल और रंग का व्यापार शनि से जुडे जातकों को फ़ायदा देने वाला होता है.चपरासी की नौकरी, ड्राइवर, समाज कल्याण की नौकरी नगर पालिका वाले काम, जज, वकील, राजदूत आदि वाले पद शनि की नौकरी मे आते हैं।

शनि सम्बन्धी दान पुण्य

पुष्य, अनुराधा और उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों के समय में शनि पीडा के निवारण के लिए स्वयं के वजन के बराबर या दशांश वजन के काले चने, काले कपडे, जामुन के फ़ल, काले उडद, काली गाय, काले जूते, तिल, भैंस, लोहा, तेल, नीलम, कुलथी, काले व नीले फ़ूल, कस्तूरी आदि दान की वस्तुओं का दान किया जाता है। यदि इन नक्षत्रो व शनिवार का संयोग हो तो और भी उत्तमफल प्राप्त होते हैं।

सुनी, इसके साथ ही नगर और जनपद-वासियों को बहुत व्याकुल देखा। उस समय नगर और ग्रामों के निवासी भयभीत होकर राजा से इस विपत्ति से रक्षा की प्रार्थना करने लगे। अपने प्रजाजनों की व्याकुलता को देखकर राजा दशरथ वशिष्ठ ऋषि तथा प्रमुख ब्राह्मणों से कहने लगे- 'हे ब्राह्मणों ! इस समस्या का कोई समाधान मुझे बताइए।'।।१-६

इस पर वशिष्ठ जी कहने लगे- 'प्रजापति के इस नक्षत्र (रोहिणी) में यदि शनि भेदन होता है तो प्रजाजन सुखी कैसे रह सकते हैं। इस योग के दुष्प्रभाव से तो ब्रह्मा एवं इन्द्रादिक देवता भी रक्षा करने में असमर्थ हैं।।७।। विद्वानों के यह वचन सुनकर राजा को ऐसा प्रतीत हुआ कि यदि वे इस संकट की घड़ी को न टाल सके तो उन्हें कायर कहा जाएगा। अतः राजा विचार करके साहस बटोरकर दिव्य धनुष तथा दिव्य आयुधों से युक्त होकर रथ को तीव्र गति से चलाते हुए चन्द्रमा से भी तीन लाख योजन ऊपर नक्षत्र मण्डल में ले गए। मणियों तथा रत्नों से सुशोभित स्वर्ण-निर्मित रथ में बैठे हुए महाबली राजा ने रोहिणी के पीछे आकर रथ को रोक दिया।

सफेद घोड़ों से युक्त और ऊँची-ऊँची ध्वजाओं से सुशोभित मुकुट में जड़े हुए बहुमुल्य रत्नों से प्रकाशमान राजा दशरथ उस समय आकाश में दूसरे सूर्य की भांति चमक रहे थे। शनि को कृतिका नक्षत्र के पश्चात् रोहिनी नक्षत्र में प्रवेश का इच्छुक देखकर राजा दशरथ बाण युक्त धनुष कानों तक खींचकर भृकुटियां तानकर शनि के सामने डटकर खड़े हो गए। अपने सामने देव-असुरों के संहारक अस्त्रों से युक्त दशरथ को खड़ा देखकर शनि थोड़ा डर गया और हंसते हुए राजा से कहने लगा।।८-१४

शनि उवाच-

पौरुषं तव राजेन्द्र ! मया दृष्टं न कस्यचित्।
देवासुरामनुष्याशऽच सिद्ध-विद्याधरोरगाः।।१५
मयाविलोकिताः सर्वेभयं गच्छन्ति तत्क्षणात्।
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र ! तपसापौरुषेण च।।१६
वरं ब्रूहि प्रदास्यामि स्वेच्छया रघुनन्दनः !

भावार्थ: शनि कहने लगा- ' हे राजेन्द्र ! तुम्हारे जैसा पुरुषार्थ मैंने किसी में नहीं देखा, क्योंकि देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर और सर्प जाति के जीव मेरे देखने मात्र से ही भय-ग्रस्त हो जाते हैं। हे राजेन्द्र ! मैं तुम्हारी तपस्या और पुरुषार्थ से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। अतः हे रघुनन्दन ! जो तुम्हारी इच्छा हो वर मां लो, मैं तुम्हें दूंगा।।१५-१६।।

दशरथ उवाच-

प्रसन्नोयदि मे सौरे ! एकश्चास्तु वरः परः।।१७
रोहिणीं भेदयित्वा तु न गन्तव्यं कदाचन्।
सरितः सागरा यावद्यावच्चन्द्रार्कमेदिनी।।१८
याचितं तु महासौरे ! नऽन्यमिच्छाम्यहं।
एवमस्तुशनिप्रोक्तं वरलब्ध्वा तु शाश्वतम्।।१९
प्राप्यैवं तु वरं राजा कृतकृत्योऽभवत्तदा।
पुनरेवाऽब्रवीत्तुष्टो वरं वरम् सुव्रत ! ।।२०

भावार्थ: दशरथ ने कहा- हे सूर्य-पुत्र शनि-देव ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मैं केवल एक ही वर मांगता हूँ कि जब तक नदियां, सागर, चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वी इस संसार में है, तब तक आप रोहिणी शकट भेदन कदापि न करें। मैं केवल यही वर मांगता हूँ और मेरी कोई इच्छा नहीं है।'

तब शनि ने **'एवमस्तु'** कहकर वर दे दिया। इस प्रकार शनि से वर प्राप्त करके राजा अपने को धन्य समझने लगा। तब शनि ने कहा- 'मैं पुमसे परम प्रसन्न हूँ, तुम और भी वर मांग लो।।१७-२०

प्रार्थयामास हृष्टात्मा वरमन्यं शनिं तदा।
नभेत्तव्यं न भेत्तव्यं त्वया भास्करनन्दन।।२१
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं न कर्तव्यं कदाचन।
कीर्तिरषामदीया च त्रैलोक्ये तु भविष्यति।।२२
एवं वरं तु सम्प्राप्य हृष्टरोमा स पार्थिवः।
रथोपरिधनुः स्थाप्यभूत्वा चैव कृताञ्जलिः।।२३
ध्यात्वा सरस्वती देवीं गणनाथं विनायकम्।

राजा दशरथः स्तोत्रं सौरेरिदमथाऽकरोत्॥२४
भावार्थ: तब राजा ने प्रसन्न होकर शनि से दूसरा वर मांगा। तब शनि कहने लगे- 'हे सूर्य वंशियो के पुत्र तुम निर्भय रहो, निर्भय रहो। बारह वर्ष तक तुम्हारे राज्य में अकाल नहीं पड़ेगा। तुम्हारी यश-कीर्ति तीनों लोकों में फैलेगी। ऐसा वर पाकर राजा प्रसन्न होकर धनुष-बाण रथ में रखकर सरस्वती देवी तथा गणपति का ध्यान करके शनि की स्तुति इस प्रकार करने लगा॥२१-२४

दशरथकृत शनि स्तोत्र

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठ निभाय च।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः ॥२५॥
नमो निर्मांस देहाय दीर्घश्मश्रुजटाय च ।
नमो विशालनेत्राय शुष्कोदर भयाकृते॥२६
नमः पुष्कलगात्राय स्थूलरोम्णेऽथ वै नमः।
नमो दीर्घाय शुष्काय कालदंष्ट्र नमोऽस्तु ते॥२७
नमस्ते कोटराक्षाय दुर्नरीक्ष्याय वै नमः ।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने॥२८
नमस्ते सर्वभक्षाय बलीमुख नमोऽस्तु ते।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च ॥२९
अधोदृष्टेः नमस्तेऽस्तु संवर्तक नमोऽस्तु ते।
नमो मन्दगते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमोऽस्तुते ॥३०
तपसा दग्ध-देहाय नित्यं योगरताय च ।
नमो नित्यं क्षुधार्ताय अतृप्ताय च वै नमः ॥३१
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मज-सूनवे ।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥३२
देवासुरमनुष्याश्च सिद्ध-विद्याधरोरगाः।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशं यान्ति समूलतः॥३३
प्रसाद कुरु मे सौरे ! वारदो भव भास्करे।
एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः ॥३४

भावार्थ: जिनके शरीर का वर्ण कृष्ण नील तथा भगवान् शंकर के समान है, उन शनि देव को नमस्कार है। जो जगत् के लिए कालाग्नि एवं कृतान्त रुप हैं, उन शनैश्चर को बार-बार नमस्कार है॥२५
जिनका शरीर कंकाल जैसा मांस-हीन तथा जिनकी दाढ़ी-मूंछ और जटा बढ़ी हुई है, उन शनिदेव को नमस्कार है। जिनके बड़े-बड़े नेत्र, पीठ में सटा हुआ पेट और भयानक आकार है, उन शनैश्चर देव को नमस्कार है॥२६
जिनके शरीर का ढांचा फैला हुआ है, जिनके रोएं बहुत मोटे हैं, जो लम्बे-चौड़े किन्तु सूके शरीर वाले हैं तथा जिनकी दाढ़ें कालरुप हैं, उन शनिदेव को बार-बार प्रणाम है॥२७
हे शने ! आपके नेत्र कोटर के समान गहरे हैं, आपकी ओर देखना कठिन है, आप घोर रौद्र, भीषण और विकराल हैं, आपको नमस्कार है॥२८
वलीमूख ! आप सब कुछ भक्षण करने वाले हैं, आपको नमस्कार है। सूर्यनन्दन ! भास्कर-पुत्र ! अभय देने वाले देवता ! आपको प्रणाम है॥२९
नीचे की ओर दृष्टि रखने वाले शनिदेव ! आपको नमस्कार है। संवर्तक ! आपको प्रणाम है। मन्दगति से चलने वाले शनैश्चर ! आपका प्रतीक तलवार के समान है, आपको पुनः-पुनः प्रणाम है॥३०
आपने तपस्या से अपनी देह को दग्ध कर लिया है, आप सदा योगाभ्यास में तत्पर, भूख से आतुर और अतृप्त रहते हैं। आपको सदा सर्वदा नमस्कार है॥३१
ज्ञाननेत्र ! आपको प्रणाम है। काश्यपनन्दन सूर्यपुत्र शनिदेव आपको नमस्कार है। आप सन्तुष्ट होने पर राज्य दे देते हैं और रुष्ट होने पर उसे तत्क्षण हर लेते हैं॥३२
देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर और नाग- ये सब आपकी दृष्टि पड़ने पर समूल नष्ट हो जाते हैं॥३३
देव मुझ पर प्रसन्न होइए। मैं वर पाने के योग्य हूँ और आपकी शरण में आया हूँ॥३४

एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः।
अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा च पार्थिवः॥३५
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र ! स्तोत्रेणाऽनेन सुव्रत।
एवं वरं प्रदास्यामि यत्ते मनसि वर्तते॥३६

भावार्थ: राजा दशरथ के इस प्रकार प्रार्थना करने पर ग्रहों के राजा महाबलवान् सूर्य-पुत्र शनैश्चर बोले- 'उत्तम व्रत के पालक राजा दशरथ ! तुम्हारी इस स्तुति से मैं अत्यन्त सन्तुष्ट हूँ। रघुनन्दन ! तुम इच्छानुसार वर मांगो, मैं अवश्य दूंगा।।३५-३६

दशरथ उवाच-

प्रसन्नो यदि मे सौरे ! वरं देहि ममेप्सितम्।
अद्य प्रभृति-पिंगाक्ष ! पीडा देया न कस्यचित्।।३७

भावार्थ: प्रसादं कुरु मे सौरे ! वरोऽयं मे महेप्सितः। राजा दशरथ बोले- 'प्रभु ! आज से आप देवता, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी तथा नाग-किसी भी प्राणी को पीड़ा न दें। बस यही मेरा प्रिय वर है।।३७

शनि उवाच-

अदेयस्तु वरौऽस्माकं तुष्टोऽहं च ददामि ते।।३८
त्वयाप्रोक्तं च मे स्तोत्रं ये पठिष्यन्ति मानवाः।
देवऽसुर-मनुष्याश्च सिद्ध विद्याधरोरगा।।३९
न तेषां बाधते पीडा मत्कृता वै कदाचन।
मृत्युस्थाने चतुर्थे वा जन्म-व्यय-द्वितीयगे।।४०
गोचरे जन्मकाले वा दशास्वन्तर्दशासु च।
यः पठेद् द्वि-त्रिसन्ध्यं वा शुचिर्भूत्वा समाहितः।।४१
न तस्य जायते पीडा कृता वै ममनिश्चितम्।
प्रतिमा लोहजां कृत्वा मम राजन् चतुर्भुजाम्।।४२
वरदां च धनुः-शूल-बाणांकितकरां शुभाम्।
आयुतमेकजप्यं च तद्दशांशेन होमतः।।४३
कृष्णैस्तिलैः शमीपत्रैर्धृत्वाक्तैर्नीलपंकजैः।
पायससंशर्करायुक्तं घृतमिश्रं च होमयेत्।।४४
ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र स्वशक्तया घृत-पायसैः।
तैले वा तेलराशौ वा प्रत्यक्ष व यथाविधिः।।४५
पूजनं चैव मन्त्रेण कुंकुमाद्यं च लेपयेत्।
नील्या वा कृष्णतुलसी शमीपत्रादिभिः शुभैः।।४६
दद्यान्मे प्रीतये यस्तु कृष्णवस्त्रादिकं शुभम्।
धेनुं वा वृषभं चापि सवत्सां च पयस्विनीम्।।४७
एवं विशेषपूजां च मद्वारे कुरुते नृप !
मन्त्रोद्धारविशेषेण स्तोत्रेणऽनेन पूजयेत्।।४८
पूजयित्वा जपेत्स्तोत्रं भूत्वा चैव कृताञ्जलिः।
तस्य पीडां न चैवऽहं करिष्यामि कदाचन्।।४९
रक्षामि सततं तस्य पीडां चान्यग्रहस्य च।
अनेनैव प्रकारेण पीडामुक्तं जगद्भवेत्।।५०

भावार्थ: शनि ने कहा- 'हे राजन् ! यद्यपि ऐसा वर मैं किसी को देता नहीं हूँ, किन्तु सन्तुष्ट होने के कारण तुमको दे रहा हूँ। तुम्हारे द्वारा कहे गये इस स्तोत्र को जो मनुष्य, देव अथवा असुर, सिद्ध तथा विद्वान आदि पढ़ेंगे, उन्हें शनि बाधा नहीं होगी। जिनके गोचर में महादशा या अन्तर्दशा में अथवा लग्न स्थान, द्वितीय, चतुर्थ, अष्टम या द्वादश स्थान में शनि हो वे व्यक्ति यदि पवित्र होकर प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल के समय इस स्तोत्र को ध्यान देकर पढ़ेंगे, उनको निश्चित रुप से मैं पीड़ित नहीं करुंगा।।३८-४१

हे राजन ! जिनको मेरी कृपा प्राप्त करनी है, उन्हें चाहिए कि वे मेरी एक लोहे की मीर्ति बनाएं, जिसकी चार भुजाएं हो और उनमें धनुष, भाला और बाण धारण किए हुए हो।* इसके पश्चात् दस हजार की संख्या में इस स्तोत्र का जप करें, जप का दशांश हवन करे, जिसकी सामग्री काले तिल, शमी-पत्र, घी, नील कमल, खीर, चीनी मिलाकर बनाई जाए। इसके पश्चात् घी तथा दूध से निर्मित पदार्थों से ब्राह्मणों को भोजन कराएं। उपरोक्त शनि की प्रतिमा को तिल के तेल या तिलों के ढेर में रखकर विधि-विधान-पूर्वक मन्त्र द्वारा पूजन करें, कुंकुम इत्यादि चढ़ाएं, नीली तथा काली तुलसी, शमी-पत्र मुझे प्रसन्न करने के लिए अर्पित करें।

काले रंग के वस्त्र, बैल, दूध देने वाली गाय- बछड़े सहित दान में दें। हे राजन ! जो मन्त्रोद्धारपूर्वक इस स्तोत्र से मेरी पूजा करता है, पूजा करके हाथ जोड़कर इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसको मैं किसी प्रकार की पीड़ा नहीं होने दूंगा। इतना ही नहीं, अन्य ग्रहों की पीड़ा से भी मैं उसकी रक्षा करुंगा। इस तरह अनेकों प्रकार से मैं जगत को पीड़ा से मुक्त करता हूँ।।।४२-५०

शनि अष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ शनैश्चराय नमः ॥
ॐ शान्ताय नमः ॥
ॐ सर्वाभीष्टप्रदायिने नमः ॥
ॐ शरण्याय नमः ॥
ॐ वरेण्याय नमः ॥
ॐ सर्वेशाय नमः ॥
ॐ सौम्याय नमः ॥
ॐ सुरवन्द्याय नमः ॥
ॐ सुरलोकविहारिणे नमः ॥
ॐ सुखासनोपविष्टाय नमः ॥
ॐ सुन्दराय नमः ॥
ॐ घनाय नमः ॥
ॐ घनरूपाय नमः ॥
ॐ घनाभरणधारिणे नमः ॥
ॐ घनसारविलेपाय नमः ॥
ॐ खद्योताय नमः ॥
ॐ मन्दाय नमः ॥
ॐ मन्दचेष्टाय नमः ॥
ॐ महनीयगुणात्मने नमः ॥
ॐ मर्त्यपावनपदाय नमः ॥
ॐ महेशाय नमः ॥
ॐ छायापुत्राय नमः ॥
ॐ शर्वाय नमः ॥
ॐ शततूणीरधारिणे नमः ॥
ॐ चरस्थिरस्वभावाय नमः ॥
ॐ अचञ्चलाय नमः ॥
ॐ नीलवर्णाय नमः ॥
ॐ नित्याय नमः ॥
ॐ नीलाञ्जननिभाय नमः ॥
ॐ नीलाम्बरविभूशणाय नमः ॥
ॐ निश्चलाय नमः ॥
ॐ वेद्याय नमः ॥
ॐ विधिरूपाय नमः ॥
ॐ विरोधाधारभूमये नमः ॥
ॐ भेदास्पदस्वभावाय नमः ॥
ॐ वज्रदेहाय नमः ॥
ॐ वैराग्यदाय नमः ॥

ॐ वीराय नमः ॥
ॐ वीतरोगभयाय नमः ॥
ॐ विपत्परम्परेशाय नमः ॥
ॐ विश्ववन्द्याय नमः ॥
ॐ गृध्नवाहाय नमः ॥
ॐ गूढाय नमः ॥
ॐ कूर्माङ्गाय नमः ॥
ॐ कुरूपिणे नमः ॥
ॐ कुत्सिताय नमः ॥
ॐ गुणाढ्याय नमः ॥
ॐ गोचराय नमः ॥
ॐ अविद्यामूलनाशाय नमः ॥
ॐ विद्याविद्यास्वरूपिणे नमः ॥
ॐ आयुष्यकारणाय नमः ॥
ॐ आपदुद्धर्त्रे नमः ॥
ॐ विष्णुभक्ताय नमः ॥
ॐ वशिने नमः ॥
ॐ विविधागमवेदिने नमः ॥
ॐ विधिस्तुत्याय नमः ॥
ॐ वन्द्याय नमः ॥
ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥
ॐ वरिष्ठाय नमः ॥
ॐ गरिष्ठाय नमः ॥
ॐ वज्राङ्कुशधराय नमः ॥
ॐ वरदाभयहस्ताय नमः ॥
ॐ वामनाय नमः ॥
ॐ ज्येष्ठापत्नीसमेताय नमः ॥
ॐ श्रेष्ठाय नमः ॥
ॐ मितभाषिणे नमः ॥
ॐ कष्टौघनाशकर्त्रे नमः ॥
ॐ पुष्टिदाय नमः ॥
ॐ स्तुत्याय नमः ॥
ॐ स्तोत्रगम्याय नमः ॥
ॐ भक्तिवश्याय नमः ॥
ॐ भानवे नमः ॥
ॐभानुपुत्राय नमः ॥
ॐ भव्याय नमः ॥

ॐ पावनाय नमः ॥
ॐ धनुर्मण्डलसंस्थाय नमः ॥
ॐ धनदाय नमः ॥
ॐ धनुष्मते नमः ॥
ॐ तनुप्रकाशदेहाय नमः ॥
ॐ तामसाय नमः ॥
ॐ अशेषजनवन्द्याय नमः ॥
ॐ विशेशफलदायिने नमः ॥
ॐ वशीकृतजनेशाय नमः ॥
ॐ पशूनां पतये नमः ॥
ॐ खेचराय नमः ॥
ॐ खगेशाय नमः ॥
ॐ घननीलाम्बराय नमः ॥
ॐ काठिन्यमानसाय नमः ॥
ॐ आर्यगणस्तुत्याय नमः ॥
ॐ नीलच्छत्राय नमः ॥
ॐ नित्याय नमः ॥
ॐ निर्गुणाय नमः ॥
ॐ गुणात्मने नमः ॥
ॐ निरामयाय नमः ॥
ॐ निन्द्याय नमः ॥
ॐ वन्दनीयाय नमः ॥
ॐ धीराय नमः ॥
ॐ दिव्यदेहाय नमः ॥
ॐ दीनार्तिहरणाय नमः ॥
ॐ दैन्यनाशकराय नमः ॥
ॐ आर्यजनगण्याय नमः ॥
ॐ क्रूराय नमः ॥
ॐ क्रूरचेष्टाय नमः ॥
ॐ कामक्रोधकराय नमः ॥
ॐ कलत्रपुत्रशत्रुत्वकारणाय नमः ॥
ॐ परिपोषितभक्ताय नमः ॥
ॐ परभीतिहराय नमः ॥
ॐ भक्तसंघमनोऽभीष्टफलदाय नमः ॥

॥ इति शनि अष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णम् ॥

॥श्री शनि अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः॥
शनैश्चराय शान्ताय सर्वाभीष्टप्रदायिने ।
शरण्याय वरेण्याय सर्वेशाय नमो नमः॥१॥
सौम्याय सुरवन्द्याय सुरलोकविहारिणे ।
सुखासनोपविष्टाय सुन्दराय नमो नमः॥२॥
घनाय घनरूपाय घनाभरणधारिणे ।
घनसारविलेपाय खद्योताय नमो नमः॥३॥
मन्दाय मन्दचेष्टाय महनीयगुणात्मने ।
मर्त्यपावनपादाय महेशाय नमो नमः॥४॥
छायापुत्राय शर्वाय शरतूणीरधारिणे ।
चरस्थिरस्वभावाय चञ्चलाय नमो नमः॥५॥

नीलवर्णाय नित्याय नीलाञ्जननिभाय च ।
नीलाम्बरविभूषाय निश्चलाय नमो नमः॥६॥
वेद्याय विधिरूपाय विरोधाधारभूमये ।
भेदास्पदस्वभावाय वज्रदेहाय ते नमः॥७॥
वैराग्यदाय वीराय वीतरोगभयाय च ।
विपत्परम्परेशाय विश्ववन्द्याय ते नमः॥८॥
गृध्नवाहाय गूढाय कूर्मांगाय कुरूपिणे ।
कुत्सिताय गुणाढ्याय गोचराय नमो नमः॥९॥
अविद्यामूलनाशाय विद्याऽविद्यास्वरूपिणे ।
आयुष्यकारणायाऽपदुद्धर्त्रे च नमो नमः॥१०॥

विष्णुभक्ताय वशिने विविधागमवेदिने ।
विधिस्तुत्याय वन्द्याय विरूपाक्षाय ते नमः॥११॥

वरिष्ठाय गरिष्ठाय वज्रांकुशधराय च ।
वरदाभयहस्ताय वामनाय नमो नमः॥१२॥
ज्येष्ठापत्नीसमेताय श्रेष्ठाय मितभाषिणे ।
कष्टौघनाशकर्याय पुष्टिदाय नमो नमः॥१३॥
स्तुत्याय स्तोत्रगम्याय भक्तिवश्याय भानवे ।
भानुपुत्राय भव्याय पावनाय नमो नमः॥१४॥
धनुर्मण्डलसंस्थाय धनदाय धनुष्मते ।
तनुप्रकाशदेहाय तामसाय नमो नमः॥१५॥

अशेषजनवन्द्याय विशेषफलदायिने ।
वशीकृतजनेशाय पशूनाम्पतये नमः॥१६॥
खेचराय खगेशाय घननीलाम्बराय च ।
काठिन्यमानसायाऽर्यगणस्तुत्याय ते नमः॥१७॥
नीलच्छत्राय नित्याय निर्गुणाय गुणात्मने ।
निरामयाय निन्द्याय वन्दनीयाय ते नमः॥१८॥
धीराय दिव्यदेहाय दीनार्तिहरणाय च ।
दैन्यनाशकरायाऽर्यजनगण्याय ते नमः॥१९॥
क्रूराय क्रूरचेष्टाय कामक्रोधकराय च ।
कळत्रपुत्रशत्रुत्वकारणाय नमो नमः॥२०॥

परिपोषितभक्ताय परभीतिहराय ।
भक्तसंघमनोऽभीष्टफलदाय नमो नमः॥२१॥

इत्थं शनैश्चरायेदं नांनामष्टोत्तरम् शतम् ।
प्रत्यहं प्रजपन्मर्त्यो दीर्घमायुरवाप्नुयात्॥

॥श्री शनिनामस्तुतिः ॥

क्रोडं नीलाञ्जनप्रख्यम् नीलवर्णसमस्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतम् नमस्यामि शनैश्चरम्॥
नमोऽर्कपुत्राय शनैश्चराय नीहारवर्णाञ्जनमेचकाय।
श्रुत्वा रहस्यम् भवकामदश्च फलप्रदो
मे भव सूर्यपुत्र॥
नमोऽस्तु प्रेतराजाय कृष्णदेहाय वै नमः।
शनैश्चराय क्रूराय शुद्धबुद्धिप्रदायिने॥

॥अथः फल्श्रुतिः॥
य एभिर्नामभिः स्तौति तस्य तुष्टो
भवाम्यहम्।
मदीयम् तु भयम् तस्य स्वप्नेऽपि न
भविष्यति॥

॥श्री भविष्यपुराणे श्रीशनिनामस्तुतिः सम्पूर्णा॥

मोहिनी एकादशी 3 - 4 मई 2020

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

वैशाख शुक्ल एकादशी व्रत

वैशाख शुक्ल एकादशीको मोहिनी एकादशी कहा जाता हैं। विद्वानों के मतानुशार मोहिनी एकादशी के व्रत से मनुष्य के मोह-माया एवं पाप कर्म दूर होते हैं। धर्म शास्त्रों में वर्णित हैं की श्री रामजी ने सीताजीकी खोज करते समय इस व्रतको किया था एवं श्रीकृष्णके कहनेसे युधिष्ठिर ने भी किया था। इस कलयुग में इस व्रतका बड़ा महत्व माना जाता हैं। इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य के खोये हुवे सुख-शाधनों की पुनः प्राप्ति हो कर मृत्यु उपरांत स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती हैं।

एक प्रसंग के अनुसार अर्जुन बोले - "हे भगवन् ! वैशाख मास की शुक्लपक्ष की एकादशी का क्या नाम है ! तथा उसकी विधि क्या है ! और उसने कौन से फल की प्राप्ति होती है ! यह सब कृपा पूर्वक सविस्तार से कहिए ।

भगवान् श्री कृष्ण बोले - "हे अर्जुन ! मैं एक तुम्हें पुरातन कथा कहता हूं, जिसको महर्षि वशिष्ठजी ने श्रीरामचन्द्रजी से कहीं थी। तुम इसे ध्यानपूर्वक सुनो, एक समय की बात है, श्रीरामचन्द्रजी महर्षि वशिष्ठ से बोले - हे गुरुदेव! मैंने सीताजी के वियोग में बहुत दुःख भोगे हैं। अतः मेरे दुःखों का नाश किस प्रकार होगा ? आप मुझे कोई ऐसा व्रत बताएं, जिससे मेरे समस्त पाप और दुःख का नास हो जायें।

महर्षि वशिष्ठजी बोले - 'हे राम ! आपने बहुत उत्तम प्रश्न किया है। आपके नाम के स्मरण मात्र से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है। आपने लोकहित में यह बड़ा ही उत्तम प्रश्न किया है। मैं आपको मोहिनी एकादशी व्रत का महत्त्व सुनाता हूं - वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम मोहिनी है। इस एकादशी का व्रत करने से मनुष्य के समस्त पाप तथा दुःख-संताप नष्ट हो जाते हैं। इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य मोह के जाल से छूट जाता है।

अतः हे राम ! दुःख-संताप से पीड़ित मनुष्य को इस एकादशी का व्रत अवश्य ही करना चाहिए। इस व्रत के करने से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। अब आप इसकी कथा को ध्यानपूर्वक सुनिए –

सरस्वती नदी के किनारे भद्रावती नाम की एक नगरी है। उस नगरी में द्युतिमान नाम राजा राज्य करता था। उसी नगरी में एक वैश्य रहता था, जो धन-धान्य से पूर्ण था। उसका नाम धनपाल था। वह अत्यन्त धर्मात्मा तथा विष्णुभक्त था। उसने नगर में अनेक कुआं, तालाब, भोजनशाला, धर्मशाला आदि बनवाये, सड़कों किनारे पथिकों को सुख के लिए अनेक आम, जामुन, नीम आदि के वृक्ष लगवाये। उस वैश्य के पांच पुत्र थे जिनमें से सबसे बड़ा पुत्र अत्यन्त पापी व दुष्ट था। वह वेश्याओं और दुष्टों की संगति करता था और यदि समय बचता था, उसे वह जुआ खेलने में व्यतीत करता था। वह बड़ा ही नीच था और देवता, पितृ आदि किसी को भी नहीं मानता था। अपने पिता का अधिकांश धन वह बुरे व्यसनों में ही व्यय किया करता था। मद्यपान तथा मांस का भक्षण करना उसका नित्य का कर्म

था । जब काफी समझाने-बुझाने पर भी वह सीधे रास्ते पर नहीं आया तो दु:खी होकर उसके पिता, भाइयों तथा कुटुम्बियों ने उसे घर से निकाल दिया और उसकी निन्दा करने लगे ।

घर से निकलने के बाद उसने अपने आभूषणों तथा वस्त्रों को बेच-बेचकर अपना गुजारा किया। धन नष्ट हो जाने पर वेश्याओं तथा उसके दुष्ट साथियों ने भी उसका साथ छोड़ दिया । जब वह भूख-प्यास से दु:खी हो गया तो उसने चोरी करने का विचार किया और रातों में चोरी कर-करके अपना पेट पालने लगा । एक दिन वह पकड़ा गया, परन्तु सिपाहियों ने वैश्य का पुत्र जानकर छोड़ दिया । वह दूसरी बार फिर पकड़ा गया, तब सिपाहियों ने भी उसका कोई लिहाज नहीं किया और राजा के सामने प्रस्तुत करके उसे सारी बात बताई । तब राजा ने उसे कारागार में डलवा दिया । कारागार में राजा के आदेश से उसे बहुत दु:ख दिये गये और अन्त में उसे नगर छोड़ने को कहा गया ।

वह दु:खी होकर नगरी को छोड़ गया और जंगल में पशु-पक्षियों को मार कर पेट भरने लगा । फिर बहेलिया बन गया और धनुष-बाण से पशुओं-पक्षियों को मार-मार कर खाने और बेचने लगा ।

एक दिन वह भूख और प्यास से व्याकुल होकर भोजन की खोज में निकल पड़ा और कोटिन्य ऋषि के आश्रम पर जा पहुंचा । इस समय वैसाख का महीना था । कौटिन्य ऋषि गंगा स्नान करके आये थे । उनके भीगे वस्त्रों के छींटे मात्र से इस पापी को कुछ सुबुद्धि की प्राप्ति हुई ।

वह पापी, मुनि के पास जाकर हाथ जोड़कर कहने लगा - "हे मुनि ! मैंने अपने जीवन में बहुत पाप किये हैं, आप उन पापों से छूटने का कोई साधारण और बिना धन का उपाय बतलाइये।"

तब ऋषि बोले - "तू ध्नान देकर सुन - वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत कर । इस एकादशी का नाम मोहिनी है । इसके करने से तेरे समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे ।" मुनि के वचनों को सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और मुनि की बतलाई हुई विधि के अनुसार उसने मोहिनी एकादशी का व्रत किया ।

"हे रामजी ! उस व्रत के प्रभाव से उसके समस्त पाप नष्ट हो गये और अन्त में वह गरुड़ पर विराजित होकर विष्णु लोक को गया । इस व्रत से मोह आदि भी नष्ट हो जाते हैं । संसार में इस व्रत से अन्य श्रेष्ठ कोई व्रत नहीं है । इसके माहात्म्य के श्रवण व पठन से जो पुण्य होता है, वह पुण्य एक सहस्त्र गौदान के पुण्य के बराबर है ।

***

अपरा (अचला) एकादशी व्रत 18 मई 2020

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

ज्येष्ठ कृष्ण एकादशीको अपरा एकादशी कहा जाता हैं। विद्वानों के मतानुशार इस एकादशीका नाम ' अपरा ' है । इसके व्रतसे नाम के अनुसार ही मनुष्य के अपार पाप दूर होते हैं । अपरा एकादशी के व्रत से मनुष्य के बड़े बडे पातकों का नाश होता हैं । धर्म शास्त्रों में वर्णित हैं की जो मनुष्य धनवान हो कर भी गरीब और असहायों की सहायता नहीं करते, सु-शिक्षित होते हुवे ही गरिब और अनाथ बच्चोंको नहीं पढ़ाते, धनी राजा होकर भी गरीब की सहायता नहीं करते, सबल होकर भी अपाहिज एवं निर्बल को आपत्तिसे नहीं बचते और धनवान होकर भी मुसीबत के समय किसी परिवारोंको सहायता नहीं देते, वे नरक में जाने योग्य पापी होते हैं । लेकिन एसे पापी से पापी मनुष्य भी यदि शास्त्रोंक्त विधि-विधान से अपरा एकादशी का व्रत करे तो उसे भी वैकुण्ठ की प्राप्ति होती हैं।

अर्जुन बोले - "हे भगवन् ! ज्येष्ठ मास के कृष्णपक्ष की एकादशी का क्या नाम है ! तथा उसकी विधि क्या है ! और उसने कौन से फल की प्राप्ति होती है ! यह सब कृपा पूर्वक सविस्तार से कहिए ।

भगवान श्रीकृष्ण बोले : "हे अर्जुन सकल लोकों के हित के लिए तुमने बहुत उत्तम प्रश्न किया है । अपरा एकादशी बहुत पुण्य दायक और बड़े बडे पातकों का नाश करने वाली है । अपरा एकादशी के प्रभाव से ब्रह्महत्या, सगोत्र की हत्या करनेवाला, गर्भस्थ बालक को मारनेवाला, परनिन्दक तथा परस्त्री-परपुरुष में आस्क्त भी निश्चय ही पापरहित हो जाता है । जो झूठी गवाही देता है, कारोबार में धोखा देता है, बिना जाने ही ग्रह-नक्षत्रों की गणना करता है और गलत तरह से आयुर्वेद (डॉक्टर) का ज्ञाता बनकर दूसरों का उपचार करता है वह सब नरक के भोगी होते हैं । लेकिन अपरा एकादशी के व्रत से वह पापरहित हो सकता हैं ।

यदि कोई क्षत्रिय अपने धर्म का परित्याग करके अपने कर्म रक्षा-युद्ध आदि से भागता है तो उसका धर्म भ्रष्ट होने के कारण उसे घोर नरक को भोगना पड़ता है । यदि कोई शिष्य विद्या प्राप्ती के बाद अपने गुरु की निन्दा करता है, वह भी महापातकों से युक्त होकर नरक भोगता है । लेकिन अपरा एकादशी के व्रत से एसे लोग भी पापरहित हो सकता हैं। प्रयाग में स्नान के पुण्य, शिवरात्रि का व्रत का पुण्य, पवित्र तीर्थि में स्नानआदि कर के यज्ञ करके हाथी, घोड़ा और सुवर्ण दान करने से जिस फलकी प्राप्ति होती है, अपरा एकादशी के प्रभाव से मनुष्य को वैसे ही फलों की प्राप्ति होती है। अपरा एकादशी के दिन उपवास करके भगवान के वामन स्वरुप की पूजा करने से मनुष्य को सभी पापों से मुक्ति मिलती हैं उसे श्रीविष्णुलोक प्राप्त होता है । अपरा एकादशी के व्रत को पढ़ने और सुनने से सहस्र गौदान का फल प्राप्त होता है।

वैशाख मास की अंतिम तीन तिथि का धार्मिक महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

॥श्रुतदेव उवाच॥

यास्तिस्रस्तिथयः पुण्या अंतिमाः शुक्लपक्षके ।
वैशाखमासि राजेंद्र पूर्णिमांताः शुभावहाः ॥ १ ॥
अन्त्याः पुष्करिणीसंज्ञाः सर्वपापक्षयावहाः ।
माधवे मासि यः पूर्णं स्नानं कर्तुं न च क्षमः ॥ २ ॥
तिथिष्वेतासु स स्नायात्पूर्ण मेव फलं लभेत् ।
सर्वे देवास्त्रयोदश्यां स्थित्वा जंतून्पुनंति हि ॥३ ॥
पूर्णायाः पर्वतीर्थैश्च विष्णुना सह संस्थिताः ।
चतुर्दश्यां सयज्ञाश्च देवा एतान्पुनंति हि ॥ ४ ॥

(अध्यायः २५ । वैशाखमासमाहात्म्यम् । वैष्णवखण्डः । खण्डः २ । स्कन्दपुराण)

भावार्थ: वैशाख मास की अंतिम तीन तिथि (त्रयोदशी, चतुर्दशी एवं पूर्णिमा) अत्यंत पवित्र और शुभकारक हैं उनका नाम पुष्करिणी है। जो सब पापों का क्षय करनेवाली हैं। जो सम्पूर्ण वैशाख मास में ब्रह्म मुहूर्त में पुण्यस्नान, व्रत, नियम आदि करने में असमर्थ हों, वह यदि इन अंतिम 3 तिथियों में भी उसे करले तो संपूर्ण वैशाख मास का फल प्राप्त कर लेता है ।

ब्रह्मघ्नं वा सुरापं वा सर्वानेतान्पुनंति हि ।
एकादश्यां पुरा जज्ञे वैशाख्याममृतं शुभम् ॥ ५ ॥
द्वादश्यां पालितं तच्च विष्णुना प्रभविष्णुना ।
त्रयोदश्यां सुधां देवान्पाययामास वै हरिः ॥ ६ ॥
जघान च चतुर्दश्यां दैत्यान्देवविरोधिनः ।
पूर्णायां सर्वदेवानां साम्राज्याऽऽप्तिर्बभूव ह ॥ ७ ॥
ततो देवाः सुसंतुष्टा एतासां च वरं ददुः ।
तिसृणां च तिथीनां वै प्रीत्योत्फुल्लविलोचनाः ॥ ८ ॥
एता वैशाख मासस्य तिस्रश्च तिथयः शुभाः ।
पुत्रपौत्रादिफलदा नराणां पापहानिदाः ॥ ९ ॥
योऽस्मिन्मासे च संपूर्णे न स्नातो मनुजाधमः ।
तिथित्रये तु स स्नात्वा पूर्णमेव फलं लभेत् ॥ १० ॥
तिथित्रयेप्यकुर्वाणः स्नानदानादिकं नरः ।
चांडालीं योनिमासाद्य पश्चाद्रौरवमश्नुते ॥ ११ ॥

भावार्थ: पुरातन काल में वैशाख शुक्ल एकादशी के दिन शुभ अमृत प्रकट हुआ। द्वादशी को भगवान विष्णु ने अमृत की रक्षा की। त्रयोदशी को भगवान श्री हरि ने देवताओं को अमृत का सुधापान कराया। चतुर्दशी को देवताओं के विरोधी दैत्यों का संहार किया और पूर्णिमा के दिन समस्त देवताओं को उनका साम्राज्य पुनः प्राप्त हो गया। इसलिए देवताओं ने संतुष्ट होकर इन तीन तिथियों को विशेष वर दिया वैशाख की ये तीन शुभ तिथियाँ मनुष्यों के पापों का नाश करने वाली तथा उन्हें पुत्र-पौत्रादि फल प्रदान करने वाली हों। जो सम्पूर्ण वैशाख में प्रातः पुण्य स्नान न कर

सका हो, वह इन 3 तिथियों में उसे कर लेने पर भी पूर्ण फल को पाता लेता है। वैशाख में लौकिक कामनाओं को नियंत्रित करने पर मनुष्य निश्चय ही भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त कर लेता है।

गीतापाठं तु यः कुर्यादंतिमे च दिनत्रये ।
दिनेदिनेऽश्वमेधानां फलमेति न संशयः ॥ १२ ॥

भावार्थ: जो वैशाख मास में अंतिम 3 दिन गीता का पाठ करता है, उसे प्रतिदिन अश्वमेध यज्ञ के समान फल मिलता है ।

सहस्रनामपठनं यः कुर्य्याच्च दिनत्रये ।
तस्य पुण्यफलं वक्तुं कः शक्तो दिवि वा भुवि॥ १३ ॥

भावार्थ: जो इन अंतिम 3 दिन श्रीविष्णुसहस्रनाम का पाठ करता है, उसके पुण्यफल का वर्णन करने में तो इस भूलोक व स्वर्गलोक में कौन समर्थ है !

सहस्रनामभिर्देवं पूर्णायां मधुसूदनम् ।
पयसा स्नाप्य वै याति विष्णुलोकमकल्मषम् ॥ १४ ॥

भावार्थ: जो वैशाख पूर्णिमा को सहस्रनामों के द्वारा भगवान् मधुसूदन को दूध से स्नान कराता है वह वैकुण्ठ धाम को जाता है।

यो वै भागवतं शास्त्रं शृणोत्येतद्दिनत्रये ।
न पापैर्लिप्यते क्वाऽपि पद्मपत्रमिवांभसा ॥ १५ ॥

भावार्थ: जो वैशाख के अंतिम 3 दिनों में भागवत शास्त्र का श्रवण करता है, वह जल में कमल के पत्तों की तरह कभी पापों में लिप्त नहीं होता ।

देवत्वं मनुजैः प्राप्तं कैश्चित्सिद्धत्वमेव च ।
कैश्चित्प्राप्तो ब्रह्मभावो दिनत्रयनिषेवणात् ॥ १६ ॥

भावार्थ: इन अंतिम 3 दिनों में शास्त्र-पठन व पुण्य कर्मों से कितने ही मनुष्यों ने देवत्व प्राप्त कर लिया और कितने ही सिद्ध हो गये । अतः वैशाख के अंतिम दिनों में स्नान, दान, हरि पूजन अवश्य करना चाहिए ।

नोट: पाठको के मार्गदर्शन हेतु यहाँ स्कन्दपुराण से उक्त तीन तिथियों के महत्व को में केवल कुछ चयनित पंक्तियों का वर्णन किया गया हैं, मौलिक रूप से अध्यायः २५ । वैशाखमासमाहात्म्यम् । वैष्णवखण्डः । खण्डः २ । स्कन्दपुराण की पंक्तियों की संख्या अधिक हैं।

गुरु पुष्यामृत योग

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हर दिन बदलने वाले नक्षत्र मे पुष्य नक्षत्र भी एक नक्षत्र है, एवं अन्दाज से हर २७वें दिन पुष्य नक्षत्र होता है। यह जिस वार को आता है, इसका नाम भी उसी प्रकार रखा जाता है।

इसी प्रकार गुरुवार को पुष्य नक्षत्र होने से गुरु पुष्य योग कहाजात है।

गुरु पुष्य योग के बारे में विद्वान ज्योतिषियो का कहना हैं कि पुष्य नक्षत्र में धन प्राप्ति, चांदी, सोना, नये वाहन, बही-खातों की खरीदारी एवं गुरु ग्रह से संबंधित वस्तुए अत्याधिक लाभ प्रदान करती है।

हर व्यक्ति अपने शुभ कार्यो में सफलता हेतु इस शुभ महूर्त का चयन कर सबसे उपयुक्त लाभ प्राप्त कर सकता है और अशुभता से बच सकता है।

अपने जीवन में दिन-प्रतिदिन सफलता की प्राप्ति के लिए इस अद्भुत महूर्त वाले दिन किसी भी नये कार्य को जेसे नौकरी, व्यापार या परिवार से जुडे कार्य, बंध हो चुके कार्य शुरू करने के लिये एवं जीवन के कोई भी अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य करने से 99.9% निश्चित सफलता की संभावना होति है।

28 मई
प्रात: 05:41 से प्रात: 07:26 तक

- गुरुपुष्यामृत योग बहोत कम बनता है जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता है । तब बनता है गुरु पुष्य योग।
- गुरुवार के दिन शुभ कार्यो एवं आध्यात्म से संबंधित कार्य करना अति शुभ एवं मंगलमय होता है।
- एक साधक के लिए बेहद फायदेमंद होता हैं **गुरुपुष्यामृत योग**।
- पुष्य नक्षत्र भी सभी प्रकार के शुभ कार्यो एवं आध्यात्म से जुडे कार्यो के लिये अति शुभ माना गया है।
- जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता तब यह योग बन जाता है अद्भुत एवं अत्यंत शुभ फल प्रद अमृत योग।
- इस दिन विद्वान एवं गुढ रहस्यो के जानकार मां महालक्ष्मी की साधना करने की सलाह देते है।
- यह योग विशेष साधना के लिये अति शुभ एवं शीघ्र परीणाम देने वाला होता है।
- मां महालक्ष्मी का आह्वान करके अत्यंत सरलता से उनकी कृपा द्रष्टि से समृद्धि और शांति प्राप्त कि जासकती है।

पुष्य नक्षत्र का महत्व क्यों हैं?

शास्त्रो में पुष्य नक्षत्र को नक्षत्रों का राजा बताया गया हैं। जिसका स्वामी शनि ग्रह हैं। शनि को ज्योतिष में स्थायित्व का प्रतीक माना गया हैं। अतः पुष्य नक्षत्र सबसे शुभ नक्षत्रो में से एक हैं।

यदि रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तो रवि पुष्य योग और गुरुवार को हो तो और गुरु पुष्य योग कहलाता हैं।

शास्त्रों में पुष्य योग को 100 दोषों को दूर करने वाला, शुभ कार्य उद्देश्यो में निश्चित सफलता प्रदान करने वाला एवं बहुमूल्य वस्तुओं कि खरीदारी हेतु सबसे श्रेष्ठ एवं शुभ फलदायी योग माना गया है।

गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थ अमृतसिद्धि योग बनता है। शनिवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थसिद्धि योग होता है। पुष्य नक्षत्र को ब्रह्माजी का श्राप मिला था। इसलिए शास्त्रोक्त विधान से पुष्य नक्षत्र में विवाह वर्जित माना गया है।

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।
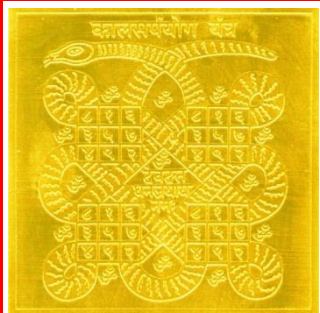
***

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

विद्या प्राप्ति हेतु सरस्वती कवच और यंत्र

आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्ति जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हिन्दू धर्म में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को माना जाता हैं। इस लिए देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना से कृपा प्राप्त करने से बुद्धि कुशाग्र एवं तीव्र होती है।

आज के सुविकसित समाज में चारों ओर बदलते परिवेश एवं आधुनिकता की दौड में नये-नये खोज एवं संशोधन के आधारो पर बच्चो के बौधिक स्तर पर अच्छे विकास हेतु विभिन्न परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धाएं होती रहती हैं, जिस में बच्चे का बुद्धिमान होना अति आवश्यक हो जाता हैं। अन्यथा बच्चा परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा में पीछड जाता हैं, जिससे आजके पढेलिखे आधुनिक बुद्धि से सुसंपन्न लोग बच्चे को मूर्ख अथवा बुद्धिहीन या अल्पबुद्धि समझते हैं। एसे बच्चो को हीन भावना से देखने लोगो को हमने देखा हैं, आपने भी कई सैकडो बार अवश्य देखा होगा?

ऐसे बच्चो की बुद्धि को कुशाग्र एवं तीव्र हो, बच्चो की बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति का विकास हो इस लिए सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक हो सकता हैं।

सरस्वती कवच को देवी सरस्वती के परंम दूर्लभ तेजस्वी मंत्रो द्वारा पूर्ण मंत्रसिद्ध और पूर्ण चैतन्ययुक्त किया जाता हैं। जिस्से जो बच्चे मंत्र जप अथवा पूजा-अर्चना नहीं कर सकते वह विशेष लाभ प्राप्त कर सके और जो बच्चे पूजा-अर्चना करते हैं, उन्हें देवी सरस्वती की कृपा शीघ्र प्राप्त हो इस लिये सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक होता हैं।

सरस्वती कवच और यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वत: ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।
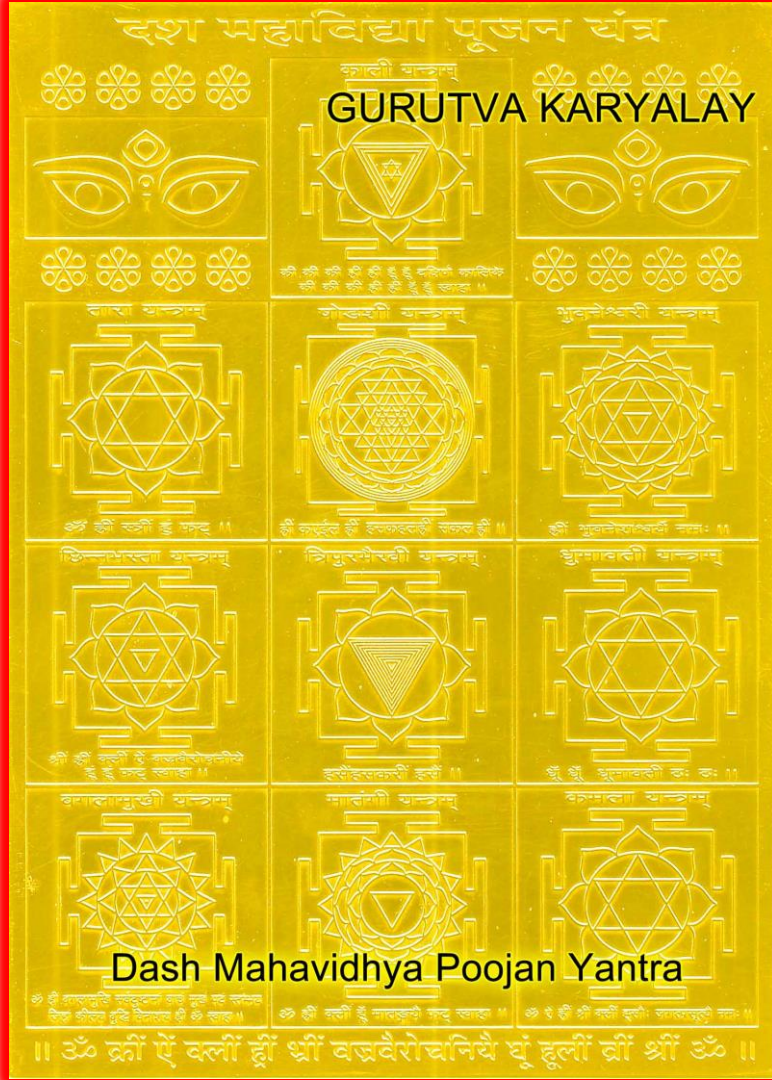
दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्ति संपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

>> Shop Online

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> Shop Online | Order Now

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र
मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रह्माण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

मई 2020 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	शुक्र	वैशाख	शुक्ल	अष्टमी	13:42	आश्लेषा	25:4	गंड	17:44	बव	13:42	कर्क	11:30
2	शनि	वैशाख	शुक्ल	नवमी	11:50	मघा	23:39	वृद्धि	15:05	कौलव	11:50	सिंह	-
3	रवि	वैशाख	शुक्ल	दशमी	09:22	पूर्वाफाल्गुनी	21:42	ध्रुव	11:57	गर	09:22	सिंह	13:33
4	सोम	वैशाख	शुक्ल	एकादशी - द्वादशी	06:23- 27:2	उत्तराफाल्गुनी	19:19	व्याघात	08:25	विष्टि	06:23	कन्या	-
5	मंगल	वैशाख	शुक्ल	त्रयोदशी	23:26	हस्त	16:38	वज्र	24:37	कौलव	13:15	कन्या	15:36
6	बुध	वैशाख	शुक्ल	चतुर्दशी	19:47	चित्रा	13:51	सिद्धि	20:35	गर	09:37	तुला	-
7	गुरु	वैशाख	शुक्ल	पूर्णिमा	16:15	स्वाती	11:07	व्यतिपात	16:39	विष्टि	05:59	तुला	17:44
8	शुक्र	ज्येष्ठ	कृष्ण	प्रतिपदा	12:58	विशाखा	08:37	वरियान	12:57	कौलव	12:58	वृश्चिक	-
9	शनि	ज्येष्ठ	कृष्ण	द्वितीया	10:09	अनुराधा	06:32	परिघ	09:38	गर	10:09	वृश्चिक	19:53
10	रवि	ज्येष्ठ	कृष्ण	तृतीया	07:55	मूल	28:12	शिव	06:47	विष्टि	07:55	धनु	-
11	सोम	ज्येष्ठ	कृष्ण	चतुर्थी	06:23	पूर्वाषाढ़	28:9	साध्य	26:52	बालव	06:23	धनु	-
12	मंगल	ज्येष्ठ	कृष्ण	पंचमी	05:38	उत्तराषाढ़	28:53	शुभ	25:51	तैतिल	05:38	धनु	22:45
13	बुध	ज्येष्ठ	कृष्ण	षष्ठी	05:42	श्रवण	-	शुक्ल	25:26	वणिज	05:42	मकर	-
14	गुरु	ज्येष्ठ	कृष्ण	सप्तमी	06:32	श्रवण	06:22	ब्रह्म	25:32	बव	06:32	मकर	23:59

15	शुक्र	ज्येष्ठ	कृष्ण	अष्टमी	08:03	धनिष्ठा	08:29	इन्द्र	26:3	कौलव	08:03	कुंभ	-
16	शनि	ज्येष्ठ	कृष्ण	नवमी	10:04	शतभिषा	11:05	वैधृति	26:50	गर	10:04	कुंभ	-
17	रवि	ज्येष्ठ	कृष्ण	दशमी	12:25	पूर्वाभाद्रपद	13:58	विषकुंभ	27:45	विष्टि	12:25	कुंभ	01:26
18	सोम	ज्येष्ठ	कृष्ण	एकादशी	14:53	उत्तराभाद्रपद	16:57	प्रीति	28:39	बालव	14:53	मीन	-
19	मंगल	ज्येष्ठ	कृष्ण	द्वादशी	17:19	रेवति	19:53	आयुष्मान	29:28	तैतिल	17:19	मीन	02:32
20	बुध	ज्येष्ठ	कृष्ण	त्रयोदशी	19:34	अश्विनी	22:36	आयुष्मान	-	गर	06:29	मेष	-
21	गुरु	ज्येष्ठ	कृष्ण	चतुर्दशी	21:32	भरणी	25:3	सौभाग्य	06:05	विष्टि	08:36	मेष	-
22	शुक्र	ज्येष्ठ	कृष्ण	अमावस्या	23:08	कृतिका	27:8	शोभन	06:27	चतुष्पाद	10:23	मेष	04:18
23	शनि	ज्येष्ठ	शुक्ल	प्रतिपदा	24:21	रोहिणि	28:51	अतिगंड	06:33	किंस्तुघ्न	11:47	वृष	-
24	रवि	ज्येष्ठ	शुक्ल	द्वितीया	25:8	मृगशिरा	-	सुकर्मा	06:20	बालव	12:47	वृष	05:44
25	सोम	ज्येष्ठ	शुक्ल	तृतीया	25:28	मृगशिरा	06:09	धृति	05:47	तैतिल	13:21	मिथुन	-
26	मंगल	ज्येष्ठ	शुक्ल	चतुर्थी	25:21	आद्रा	07:01	गंड	27:41	वणिज	13:28	मिथुन	07:27
27	बुध	ज्येष्ठ	शुक्ल	पंचमी	24:46	पुनर्वसु	07:27	वृद्धि	26:6	बव	13:07	कर्क	-
28	गुरु	ज्येष्ठ	शुक्ल	षष्ठी	23:42	पुष्य	07:26	ध्रुव	24:10	कौलव	12:18	कर्क	-
29	शुक्र	ज्येष्ठ	शुक्ल	सप्तमी	22:10	आश्लेषा	06:57	व्याघात	21:52	गर	11:00	कर्क	10:23
30	शनि	ज्येष्ठ	शुक्ल	अष्टमी	20:12	मघा	06:02	हर्षण	19:13	विष्टि	09:14	सिंह	-
31	रवि	ज्येष्ठ	शुक्ल	नवमी	17:51	उत्तराफाल्गुनी	27:0	वज्र	16:17	बालव	07:04	सिंह	12:23

मई 2020 मासिक व्रत–पर्व–त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	शुक्र	वैशाख	शुक्ल	अष्टमी	13:42	श्री दुर्गाष्टमी व्रत, श्री बगलामुखी जयन्ती,
2	शनि	वैशाख	शुक्ल	नवमी	11:50	श्री सीता नवमी, वैष्णव मतानुसार श्री जानकी जयन्ती, चण्डिका नवमी व्रत, श्री हरि जयन्ती, त्रिचूर पूरम (केर.),
3	रवि	वैशाख	शुक्ल	दशमी	09:22	मोहिनी एकादशी व्रत,
4	सोम	वैशाख	शुक्ल	एकादशी - द्वादशी	06:23-27:2	मोहिनी एकादशी व्रत, परशुराम द्वादशी, रुक्मिणी द्वादशी, द्वादशी तिथि क्षय,
5	मंगल	वैशाख	शुक्ल	त्रयोदशी	23:26	भोम प्रदोष व्रत,
6	बुध	वैशाख	शुक्ल	चतुर्दशी	19:47	नृसिंह चतुर्दशी व्रत, नृसिंहावतार जयंती महोत्सव, छिन्नमस्ता महाविद्या जयंती, संध्या कालीन पूर्णिमा व्रत,
7	गुरु	वैशाख	शुक्ल	पूर्णिमा	16:15	सूर्योदय कालीन स्नान-दान- व्रत हेतु उत्तम वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, पीपल पूनम, वृन्दावन विहार, शिप्रा स्नान (उज्जयिनी), यमराज के निमित्त जलकुंभ दान, वैशाख स्नान पूर्ण, श्रीसत्यनारायण व्रत कथा, कूर्मावतार जयंती,
8	शुक्र	ज्येष्ठ	कृष्ण	प्रतिपदा	12:58	ज्येष्ठ मास कृष्ण पक्षारम्भ,
9	शनि	ज्येष्ठ	कृष्ण	द्वितीया	10:09	देवर्षि नारद जयंती,
10	रवि	ज्येष्ठ	कृष्ण	तृतीया	07:55	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चं.उ.रा. 09:24),
11	सोम	ज्येष्ठ	कृष्ण	चतुर्थी	06:23	-
12	मंगल	ज्येष्ठ	कृष्ण	पंचमी	05:38	-
13	बुध	ज्येष्ठ	कृष्ण	षष्ठी	05:42	-
14	गुरु	ज्येष्ठ	कृष्ण	सप्तमी	06:32	वृषभ-संक्रान्ति सायं 05:16 बजे, संक्रान्ति के स्नान-दान का पुण्यकाल सुबह 10:51 से संध्या 5:16 बजे तक, पूजा-संकल्प हेतु उत्तम ग्रीष्मऋतु प्रारंभ, कल्पवास पूर्ण, कालाष्टमी व्रत,

15	शुक्र	ज्येष्ठ	कृष्ण	अष्टमी	08:03	शीतलाष्टमी व्रत, त्रिलोकीनाथाष्टमी (प.बंगाल),
16	शनि	ज्येष्ठ	कृष्ण	नवमी	10:04	-
17	रवि	ज्येष्ठ	कृष्ण	दशमी	12:25	-
18	सोम	ज्येष्ठ	कृष्ण	एकादशी	14:53	अपरा (अचला) एकादशी व्रत, जलक्रीड़ा एकादशी, पंजाब में भद्रकाली ग्यारस
19	मंगल	ज्येष्ठ	कृष्ण	द्वादशी	17:19	संध्या कालीन भोम प्रदोष व्रत,
20	बुध	ज्येष्ठ	कृष्ण	त्रयोदशी	19:34	सूर्योदय कालीन प्रदोष व्रत, त्रिदिवसीय वटसावित्री व्रत प्रारंभ (उ.भारत), निशिथ कालीन मासिक शिवरात्रि व्रत,
21	गुरु	ज्येष्ठ	कृष्ण	चतुर्दशी	21:32	त्रिदिवसीय वटसावित्री व्रत का दूसरा दिन (उ.भारत), मासिक शिवरात्रि व्रत, सावित्री चतुर्दशी,
22	शुक्र	ज्येष्ठ	कृष्ण	अमावस्या	23:08	स्नान-दान हेतु उत्तम श्राद्ध की ज्येष्ठी अमावस्या, वटसावित्री अमावस्या (बरगदाही अमावस), भावुका अमावस, करिदिन, शनि जयंती, फलहारिणी कालिका पूजा (प.बंगाल),
23	शनि	ज्येष्ठ	शुक्ल	प्रतिपदा	24:21	गंगा दशहरा स्नान प्रारंभ, ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्षारम्भ,
24	रवि	ज्येष्ठ	शुक्ल	द्वितीया	25:8	करवीर व्रत, नवीन चंद्र-दर्शन,
25	सोम	ज्येष्ठ	शुक्ल	तृतीया	25:28	रम्भातृतीया व्रत, महाराणा प्रताप जयंती,
26	मंगल	ज्येष्ठ	शुक्ल	चतुर्थी	25:21	वरदविनायक चतुर्थी व्रत(चं. अस्त.रा.9. 53), उमा चतुर्थी,
27	बुध	ज्येष्ठ	शुक्ल	पंचमी	24:46	-
28	गुरु	ज्येष्ठ	शुक्ल	षष्ठी	23:42	स्कन्द कुमार षष्ठी व्रत, अरण्यषष्ठी, विंध्यवासिनी महापूजा, जमाई षष्ठी, शीतला षष्ठी, गुरु पुष्यामृत योग प्रातः 05:41 से प्रातः 07:26 तक,
29	शुक्र	ज्येष्ठ	शुक्ल	सप्तमी	22:10	-
30	शनि	ज्येष्ठ	शुक्ल	अष्टमी	20:12	श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, धूमावती महाविद्या जयंती, ज्येष्ठाष्टमी,
	रवि	ज्येष्ठ	शुक्ल	नवमी	17:51	श्रीमहेश नवमी,

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्रः 2350 >>Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्यः- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

मई 2020 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
03	रात 21:43 से अगले दिन प्रात: 05:38 तक	19	रात 19:53 से अगले दिन प्रात: 05:27 तक
08	सुबह 08:38 से अगले दिन प्रात: 05:34 तक	23	प्रात: 05:26 से अगले दिन प्रात: 05:25
10	प्रात: 05:33 से अगले दिन प्रात: 05:32 तक	25	प्रात: 05:25 से प्रात: 06:10 तक
17	दोपहर 01:59 से अगले दिन प्रात: 05:28 तक	28	प्रात: 05:29 से प्रात: 07:27
द्विपुष्कर योग (दोगुना फल दायक)			
24	प्रात: 04:52 से रात 01:01 तक		
गुरु पुष्यामृत योग			
28	प्रात: 05:41 से प्रात: 07:26 तक,		
विघ्नकारक भद्रा			
03	रात 07:46 से अगले दिन प्रात: 06:14 तक,	16	रात 11:30 से अगले दिन दोपहर 12:45 तक,
06	रात 07:45 से अगले दिन प्रात: 06:00 तक,	20	रात 07:45 से अगले दिन सुबह 08:45 तक,
09	रात 09:06 से अगले दिन सुबह 08:06 तक,	26	दोपहर 01:18 से रात 01:10 तक,
13	प्रात: 05:25 से संध्या 06:22 तक,	29	रात 09:55 से अगले दिन सुबह 09:01 तक,

योग फल :

- ❖ कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- ❖ द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- ❖ गुरु पुष्यामृत योग में किये गये किये गये शुभ कार्य मे शुभ फलो की प्राप्ति होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- ❖ अमृत सिद्धि योग अत्यंत शुभ योग में सभी प्रकार के शुभ कार्य किए जा सकते हैं।
- ❖ शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> **Shop Online** | **Order Now**

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach ………..………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach ………...……………………..	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ……………………	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ………..………………….	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ………..……………………	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach ………..……………………….	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach ………..………………………	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………...	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ………..…………………….	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach ………..…………………….	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ………..……………………….	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ………..……………………..	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ………..……………………..	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach ………..…………………..	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ………..……	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach ………..…………………….	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ………..………………………	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ………..…………………….	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ……………………………...	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach ………..…………..	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach ………..………………….	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ………..……………………...	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach …………………………….	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ………..……	3250	शनि साड़ेसाती और ढैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ………..……………………………….	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ………..……………….	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ………….....	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach ………..…………………….	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ………..……………………………….	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach ………..…………………	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ………..………………………..	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ………..…………….	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ………..………………………..	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ………..…………….	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach ………..………………..	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ………..…………….	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ……..…………………….	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ……..……………………….	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ……..…………………	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ……..…………………..	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……..…………………………..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..………………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..……………………..…...	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..………………	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..………………...……….	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……..……………………………...	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……..…………………………….	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..………………………………	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……..……………………….	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……..…………………………..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……..………………………………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..……………………..…...	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ……..……………………………..	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..………………...……….	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……..…………………………….	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……..………………………	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..…………………………...	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach …………………………………..	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………....	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………..	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach ……………………………...	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……..…………………………	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………...	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach …………………………………	820

वाणी पुष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

मई-2020

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA JYOTISH

Monthly

MAY-2020